इन कविताओं और कहानियों में आवश्यकतानुसार पाठ-क्रम में भूमिका की भाँति कुछ इसलिए लिख दिया गया है कि उनकी सहायता से पाठ के भली भाँति समझने में सहायता मिले। जहाँ आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पाठ के अंत में 'संकेत' के द्वारा अन्यान्य कठिन शब्दों, नामों, कल्पनाओं आदि पर यथेष्ट प्रकाश डाल दिया गया है।

साथ ही इस बात में बालकों के लिए चित्रों की मनोवैज्ञानिक उपयोगिता का ध्यान रख के तिरंगे, इकरंगे, बड़े और छोटे विविध प्रकार के सुन्दर कल्पनापूर्ण चित्र भी यथास्थान संयोजित कर दिये हैं। अस्तु, मैंने अपने शिक्षण-कार्य के अनुभव और ज्ञान के सहारे इस संग्रह को अत्यन्त सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, आकर्षक और मनोरंजक बनाने की चेष्टा की है। आशा है, यह संकलन हमारे सुकुमार बालकों में अपनी मातृभाषा के प्रति अभीष्ट अनुराग उत्पन्न करेगा।

मेरी यह अभिलाषा तभी पूर्ण होगी जब इस पुस्तक के पढ़ाने वाले अध्यापक बन्धु भी इसके प्रति अपना कर्तव्य, उद्देश्य और [illegible] निश्चित करें। उनकी सहायता के लिए कुछ बातें यहाँ पर अप्रासंगिक न होंगी। इस पुस्तक को पढ़ाने के ये उद्देश्य हैं:—

(१) बालक शुद्ध रीति से गद्य और पद्य दोनों को पढ़ सकें। उनका उच्चारण ठीक हो।

( २ ) वे शब्दों, वाक्यों, प्रसङ्गों आदि का अर्थ ठीक-ठीक समझ जायँ।

( ३ ) पाठ्य-विषय का भाव और उसका गूढ़ रहस्य पूर्णतया समझ सकें;

और ( ४ ) पढ़े हुए विषय को अपने शब्दों में शुद्ध भाषा में व्यक्त कर सकें।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पढ़ाते समय निम्नांकित पद्धति का अनुसरण लाभप्रद हो सकता है।

प्रत्येक पाठ की शिक्षा आरम्भ करने के पहले एक ऐसी भूमिका दे दी जाय जिसमें बालकों की उत्सुकता पाठ की ओर बढ़े। यह भूमिका प्रश्न, घटना या आवश्यकता-वर्णन, कहावत या अन्य किसी उपयुक्त रूप में किन्तु संक्षिप्त होनी चाहिए।

अच्छा हो बालकों की यह टेव डलवा दी जाय कि वे घर में प्रति दिन का पाठ देख आवें और अपनी कठिनाई के स्थल चिह्नित कर लावें। यदि ऐसा न हो तो पाठ प्रारम्भ करने के पूर्व उन्हें कक्षा में ही मन ही मन पढ़ने का समय दे दिया जाय। ऐसा करने से छात्र-गण पाठ का विषय भली भाँति हृदयङ्गम कर सकेंगे।

पाठारम्भ के पहले ही श्यामपट्ट पर कठिन या अपरिचित शब्द या वाक्यांश लिख देने चाहिए। छात्रों द्वारा पहले उनका अर्थ या भाव निकलवा लेना चाहिए, तब प्रकृत पाठ का आरम्भ हो।

पद्यांशों को पढ़ते समय, जैसा कि कहीं-कहीं संकेत कर दिया गया है, उनके अच्छे छन्द छात्रों को कंठाग्र कराना और उनको नियमित रूप से सुनना चाहिए। उनके सुचारु रूप से पढ़ने का सम्यक् अभ्यास अति वांछनीय है। यह स्मरण रहे कि पद्यों का अर्थ कभी रटाया न जाय। ऐसा करने से बालकों का प्रेम कविता के प्रति बढ़ने न पावेगा। अवधी और ब्रज भाषा की कविता पढ़ाते समय उनमें प्रयुक्त शब्दों के उन रूपों को अच्छी तरह समझा देना चाहिए जिनका प्रयोग खड़ी बोली में न होता हो।

कविताओं के वाक्य-विन्यास, शब्द-चयन, अन्वय आदि की ओर बालकों को मार्ग प्रदर्शित कर उन्हें अपना मार्ग स्वयं ढूँढ़ निकालने में अभ्यस्त बनाना चाहिए। जहाँ नाटक या वार्तालाप हो वहाँ इस बात की चेष्टा की जाय कि पढ़ाने के बाद कक्षा में उसका अभिनय छात्रों से कराया जाय। इससे वे उस विषय को और भी अधिक पसन्द करेंगे।

जिन पाठों को भली भाँति समझाने के लिए मानचित्र की सहायता की आवश्यकता पड़े उनको उसकी सहायता से अवश्य पढ़ाया जाय।

इस प्रकार यह प्रयत्न किया जाय कि कक्षा से बाहर जाने के पूर्व प्रत्येक विद्यार्थी उस दिन के पाठ का पूरा ज्ञाता हो जाय और उसकी भाषा के शब्दों, वाक्यों, भावों आदि का ज्ञान धीरे-धीरे बढ़ता जाय। साहित्य का आनन्द लेने की भावना उसके

हृदय मे उतर जाय और उनकी रुचि परिष्कृत होती जाय। ऐसा करने के लिए हमारे लड़के-लड़कियों को परिश्रम करना पड़ेगा। परन्तु यदि ऐसा करने में भी चूक हो जायगी तो बालकों के सुकुमार हृदयों पर अपनी मातृभाषा के विशाल भवन की कच्ची और अधूरी नींव पड़ेगी। इसका दुष्परिणाम क्या होगा—यह स्वतः अनुमान किया जा सकता है।

ऊपर अध्यापक-बन्धुओं के लिए कुछ उपयोगी सम्मतियाँ अंकित हैं। उनको अपने स्वतन्त्र अध्ययन और अनुभव से परिस्थिति के अनुसार इनमें परिवर्तन का तो कम, किन्तु परि-वर्धन का पूर्ण अधिकार है। विश्वास है, अपने एक सहयोगी की उपयुक्त सम्मति के अनुसार कार्य करके वे भाषा के सच्चे सेवक होंगे।

कानपुर
२२ जुलाई, १९३२

—अयोध्यानाथ शर्मा

# चित्र-सूची

न गाओ
जो, उसे मनाओ

हिन्दी सुन्दर

वही लुब्ध (मोहित) हो

पहली

१—भगवान

जो है हमें बनानेवाला
उसका है हर काम निराला!
देखो आसमान के तारे
कितने हैं आँखों को प्यारे!
कोई नीला, कोई पीला
कोई उजला औ' चमकीला
देखो सूरज को है कैसा
सोने का गोला हो जैसा
कैसा प्यारा चाँद बनाया
जिसने देखा वही लुभाया

भरत भी राम को प्राणों के समान मानते थे। य
यहाँ तक उनके न रहने पर राज्य का काम भरत ने
चलाया। परन्तु राज्य का अधिकार अपने हाथ में र
हुए उन्हें उसका तनिक भी लोभ न हुआ। वे पूरे त्य
की भाँति जीवन बिताते थे। राम के लौटने पर अयो
का राज्य भरत ने उनको सौंप दिया। सब भाइ
प्रेम से रहने लगे।

प्रश्नावली

१—रामायण किसकी बनाई हुई पुस्तक है? इसमें कि
हाल लिखा है?

२—कैकेयी ने राम को क्यों बनवास दिलाया?

३—राम ने अरण्य में किसको जीता? उसका क्या दोष था?

४—भरत को तुम कैसा आदमी समझते हो? क्यों?

५—राम का हाल पन्द्रह पंक्तियों में लिखो।

६—इस पाठ में छिपे हुए राम के चित्र को देखो। उनके कि
में धनुष है? सिर पर क्या है? माथे पर बीचोबीच जो लकीरें हैं
क्या कहते हैं?

७—'शब्द' और 'वाक्य' में क्या भेद है? इस पाठ में आ
तीन 'शब्द' और 'वाक्य' बतलाओ।

—

## ३—भोर

उठो-उठो अब प्यारे बच्चो, हुआ मनोहर भोर।
स्वर्ण-सरीखा पीला गोला, लखो पूर्व की ओर॥
देखो, इसे देखकर ही सब, नर, पशु, पक्षी-मोर—
आलस छोड़ कुतूहल में पड़, करते हैं मृदु शोर॥
रही नहीं अब शान्तिमयी निशि, दूर हुआ तम घोर।
सारे तारे छिपे लजा कर, देख सूर्य की कोर॥
देखो, गायें बछड़े ले-ले, चलीं विपिन की ओर।
चलने लगे बटोही भी अब, हुआ जान कर भोर॥
अच्छे लड़के मुँह धोने को, चले नदी की ओर।
कई पाठ पढ़ते हैं अपना, सुन लो उनका शोर॥
किन्तु बुरे लड़कों पर अब तक, छाई निद्रा घोर।
उठते नहीं उठाने पर भी, लोग रहे झकझोर॥
देखो, ब्राह्मण साधु आदि सब, खड़े उभय-कर जोर।
सूर्यदेव के सम्मुख होकर, करते विनय अथोर॥
नदी और नालों के तट पर, मैदानों की ओर—
शीतल शुद्ध वायु बहती है, देख मनोहर भोर॥
यही वायु है बुद्धि बढ़ाती, लाती तन में जोर।
मन में सुख, उत्साह, चतुरता, भरती नित्य बटोर॥

## ५—वीर बालक अभिमन्यु

किसी समय भारत में पाण्डु नामक राजा थे। उनके पाँच पुत्र थे :-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। ये पाण्डव कहलाये। इन पाण्डवों की अनबन कुरु-वंश में उत्पन्न दुर्योधन नामक राजा से हो गई। फल यह हुआ कि कौरवों और पाण्डवों में घोर युद्ध हुआ। इस युद्ध का वर्णन 'महाभारत' नाम के एक बहुत बड़े ग्रन्थ में किया गया है।

कौरवों के सेनापति द्रोण थे। उन्होंने एक दिन एक बड़ी पेचीदा मोरचाबन्दी की। संस्कृत में उसका नाम 'चक्रव्यूह' है। ऐसे व्यूह के अन्दर घुस जाना बड़ा कठिन काम था। पाण्डवों के पक्ष में केवल अर्जुन ही उसे तोड़ सकते थे। मगर वे उस समय युद्ध करते-करते दूर निकल गये थे। यह दशा देखकर अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की ओर सब की दृष्टि गई। वह केवल सोलह वर्ष का था। उसने इस ढङ्ग की मोरचाबन्दी तोड़ने की युक्ति तो अपने पिता से सीख ली थी; मगर उसके भीतर से निकल आने की युक्ति तब तक उसने न सीख पाई थी। अपने पक्ष की हार होते देख अभिमन्यु उस क़िलेबन्दी को तोड़ने के लिए तत्काल

वीर-बालक अभिमन्यु

तैयार हो गया। उसके आत्मीयों और हितचिन्तकों ने उसे ऐसा करने से बहुत रोका। कहा—"तुम अभी बच्चे हो, ऐसे खतरे का काम तुम्हें न करना चाहिए।" यह सुन कर अभिमन्यु बोला—

मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत मानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा जानो मुझे।
है और की तो बात ही क्या, गर्व मैं करता नहीं।
मामा[1] तथा निज तात[2] से भी समर में डरता नहीं।

पर उसके पक्ष वाले वीरों ने कहा—"तुम इस मोर्चाबन्दी को तोड़ कर भीतर घुसो। हम भी तुम्हारे पीछे घुस पड़ेंगे और जरूरत पड़ने पर तुम्हारी मदद करेंगे।" अभिमन्यु ने बड़े वेग से आक्रमण करके द्रोणाचार्य के बनाये हुए व्यूह को तोड़ डाला। वह उसके भीतर घुस गया। फिर उसने बड़ा ही भीषण युद्ध करके अनेक वीरों और असंख्य सेना का संहार किया। उसके शत्रुओं ने अपनी बेहद हानि होती देख अधर्म युद्ध करने की ठानी। उन्होंने उस वीर बालक पर एक ही साथ सब ओर से आक्रमण किया और अन्याय से उसे मार डाला। अभिमन्यु के पक्ष के जिन लोगों ने

---

१—श्रीकृष्ण, २—अर्जुन (से तात्पर्य है)।

## ७–नेकी का बदला

एक शहर में जुम्मन कबाड़िया रहता था। व
बड़ा गरीब था; पर था बड़ा ईमानदार। अपने ग्राह
से कम या अधिक दाम न लेता था। दूसरे कबाड़ि
आठ आने की चीज़ को रुपये में बेचा करते। कि
जुम्मन इतना अधिक लाभ लेना पाप समझता था। व
रुपये की चीज़ पर एक आना से अधिक कभी न
लेता था। इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी दु
खूब चल निकली। शुरू-शुरू में तो वह मज़े में रहा। प
उसका तथा उसके घर का गुज़ारा होता गया। धीरे
एक दिन ऐसा आया जब उसके हाथ में एक पैसा भी
रहा, वह रोटी के टुकड़े-टुकड़े को मुहताज हो गया
बेचारा सारे दिन दूकान पर बैठा रहता; मगर कोई ग्राह
न आता। मकान का मालिक किराया माँग-माँग
तंग आगया; पर जुम्मन के पास कुछ होता तब
देता। हारकर उसने कह दिया, "यदि आग
दस तारीख तक तुमने किराया न [illegible] दिया
मैं नालिश कर दूँगा, तुम्हें दूकान
पड़ेगी।" यह सुनकर जुम्मन के चेहरे

उसने सोचा, जो होगा, देखा जायगा। अब तो लाज परमात्मा के ही हाथ है।

( २ )

अठारह तारीख तक बेचारे जुम्मन के पास किराया न जमा हुआ। जो चार पैसे आते जाते पर खर्च हो जाते। वह बड़े सोच में था कि क्या करे। उसी शाम को एक अमीर आदमी उसकी दूकान पर आया और बहुत देर तक उसकी चीजें देखता रहा। उसे कोई भी चीज पसंद न आई। वह वापिस जाने लगा। यकायक उसकी दृष्टि अलमारी के ऊपर रखी हुई एक सन्दूकची पर पड़ी। वह जाते-जाते रुक गया। जुम्मन से बोला—"यह सन्दूकची कैसी है? जरा दिखाओ तो।"

जुम्मन ने सन्दूकची उतार कर उसके सामने रख दी। बोला—"देख लीजिए; किन्तु मैं इसे बेच नहीं सकता।"

अमीर आदमी सन्दूकची देख कर बहुत खुश हुआ। वह बड़ी खूबसूरत थी। उसके पेंदे पर किसी देवता की मूर्ति बनी हुई थी, जिसके मुँह से आग की

यह सन्दूकची मेरी नहीं है। फिर मैं इसे कैसे बेच सक
हूँ?"

अमीर आदमी ने कहा, "संभव है तुम इसे बेच
को तैयार हो जाओ। इसलिए मैं एक बार कल
आऊँगा।"

संकेत

कबरिया = कबाड़ी, टूटी-फूटी पुरानी वस्तुओं का व्यापारी।

नालिश = ऋण या पावना वसूल करने के लिए सरकारी अदा
में की गई प्रार्थना।

प्रश्नावली

१—सुम्मन किस गुण के लिए प्रसिद्ध था?

२—अमीर आदमी ने सुम्मन की दूकान में कौन-सी
पसन्द की?

३—सुम्मन ने उसको बेचने से क्यों इनकार किया?

४—अमीर उसके अन्तिम उत्तर से निराश हुआ था नहीं?

५—नीचे लिखे वाक्यांशों और वाक्यों के अर्थ बताओ—

नाम निकली, टुकड़े-टुकड़े को मुहताज हो गया, एक-एक
सुन्दर थी।

६—नीचे लिखे हुए शब्दों के वर्णों में कौन-कौन से स्वर मिले
हैं?

यार, ताकी, मुस्कर, कुल, संभव।

# ८—नेकी का बदला

( क्रमागत )

( २ )

रात को जब जुम्मन घर गया तब अपनी स्त्री से बोला, "तुम्हें याद होगा पाँच-छः साल हुए हमारे पड़ोस में एक लड़की थी, जिसका नाम नईमा था। जब उसकी माँ मरी थी तब उसे हमने कई सप्ताह अपने यहाँ ठहराया था।"

स्त्री ने जवाब दिया, "हाँ, हाँ: मुझे यह घटना अच्छी तरह याद है।"

जुम्मन ने कहा, "शायद तुम्हें यह भी याद होगा कि वह अपनी एक सन्दूकची हमारे पास छोड़ गई थी। उसे उसने आज तक नहीं मँगवाया। आज उसे एक अमीर आदमी खरीदना चाहता था, मगर मैंने नहीं बेचा।"

"क्या देता था?"

"सौ रुपया देता था। शायद इससे ज्यादा भी दे देता।"

"तुमने बड़ी भूल की। उसे बेच देते तो वारे-न्यारे हो जाते। पैसे-पैसे के लिए दूसरों का मुँह देखना

पड़ता है। हमसे इतनी ईमानदारी कैसे निभ सके
और अब उस लड़की को उसकी जरूरत भी न होगी
और यह भी तो पता नहीं कि वह जीती है या म
गई।"

जुम्मन ने जवाब दिया, "यह सब कुछ ठीक है
मगर जो चीज हमारी नहीं उसे हम कैसे बेच दें?"

"और फिर परसों किराये का क्या करोगे?"

"जो होगा देखा जायगा।"

( ४ )

ये दोनों ये बातें कर ही रहे थे कि इतने में
दरवाजे पर किसी ने आवाज दी। जुम्मन ने
दरवाजा खोला। एक स्त्री अंदर आई। जुम्मन
ने उसे देखते ही पहचान लिया। यह वही
नईमा थी।

नईमा ने कहा, "तुम्हारे पास मेरी एक धरोहर
पड़ी है।"

जुम्मन ने उसी समय जाकर दूकान खोली
सन्दूकची लाकर नईमा के हाथ पर रख दी। नईमा
उसे खोल कर उसके पेंदे पर हाथ फेरा और जुम्मन
कहा, "जरा चिराग तो लाना।"

डुम्मन चिराग लाया। नईमा ने उस पर बनी हुई तसवीर के सिर पर हाथ रख कर जोर से दबाया। पेंदा दबते ही ऊपर उठ आया। उसके अन्दर एक कागज निकला। उसमें लिखा था—"हमारे मकान में वृक्ष के नीचे एक बर्तन दबा है। उसमें कई हजार के गहने हैं। जब तुम्हें जरूरत पड़े निकाल लेना।"

यह नईमा की माँ के हाथ का लिखा हुआ था। नईमा ने अपने मकान का दरवाजा तोड़ा। वृक्ष के नीचे की जमीन खोदी। सचमुच गहनों से भरा हुआ बर्तन निकल आया। वह खुशी से उछलने लगी।

( ५ )

यह देखकर डुम्मन ने नईमा से कहा, "बेटी, आज एक अमीर आदमी इसके लिए एक सौ रुपया दे रहा था; किन्तु मैंने इसे बेचने से साफ़ इनकार कर दिया। अगर बेच देता, तो तुम्हारा बड़ा नुकसान होता।" नईमा इस ईमानदारी पर बड़ी खुश हुई। कहने लगी, "यदि तुम यह सन्दूकची बेच देते तो मेरा नुकसान क्या, बिलकुल सत्यानाश ही हो जाता। कल मेरी मौसी ने

बताया कि, 'तुम्हारे पास जो सन्दूकची है उसकी तह में कोई कागज है। मुझे पता पड़ता है कि उसमें तुम्हारे लिए कोई खास बात लिखी है'। अगर तुम ऐसे ईमानदार न होते तो यह दौलत मुझे कभी न मिल सकती। इसलिए मैं चाहती हूँ कि इनमें से आधे गहने तुम ले लो।"

जुम्मन ने बहुत इनकार किया; किन्तु नईमा ने न माना। जुम्मन को जबरदस्ती आधा गहना दे दिया। दूसरे दिन वह गहना बेचा गया। जुम्मन को साढ़े सात सौ रुपये प्राप्त हुए।

यदि वह अमीर आदमी के हाथ सन्दूकची बेच देता तो जुम्मन को केवल एक सौ रुपया मिलता।

प्यारे बच्चो, ईमानदारी बड़ी चीज है। जो ईमानदार है उसका दुनिया में बड़ा मान है। बेईमान को न कोई पूछता है, न पास बैठने देता है। इसलिए ईमानदार बनो, पराये सोने को मिट्टी समझो। फिर देखो, दुनिया में तुम्हारा कितना आदर होता है।

## १०–बैठना कैसे चाहिए ?

प्रभानाथ एक विद्यार्थी है । वह अपने धनी माता पिता का इकलौता बेटा है। वह सदा दुर्बल रहता है। उसे नित्य खाने-पीने के लिए दूध, अन्जीर आदि खूब मिलते हैं, परन्तु उसकी छाती पतली, मुँह फीके रंग का और पेट बेढंगा है।

एक दिन पंडितजी ने प्रभानाथ को किनारे की बेंच पर दीवाल के आसरे अपनी कमर झुकाये उदासीन भाव से बैठे देखा। उन्होंने कई अन्य बालकों को भी कमर झुकाये बैठा पाया। वे बोले, "प्यारे बालको, कल से तुम जब स्कूल आओ अपने-अपने साथ एक-एक चौड़ी सी पट्टी और थोड़ी-थोड़ी रस्सी लेते आना।"

यह सुन सभी बच्चे अचरज करने लगे और सोचने लगे कि आज पंडितजी ने ऐसी आज्ञा क्यों दी। उन्होंने पूछा–"पंडितजी, पट्टी-रस्सी लाकर हम क्या करेंगे ?"

"तुम्हारी कमर और पीठ को पट्टी के सहारे रस्सी से बाँधेंगे, जिससे तुम्हारी कमर अभी से झुकने न पावे"–पंडितजी ने हँसते हुए उत्तर दिया।

प्रमानाथ ने पूछा, "क्या इस प्रकार बैठना हानिकारक है ?" उत्तर मिला "अवश्य।" पंडित जी ने समझाना आरम्भ किया-"हमारी पीठ के बीचोबीच हड्डियों की एक सांकल-सी है, जिसे मेरुदंड या रीढ़ कहते हैं। यही शक्ति का आधार है। इसके ऊपरी हिस्से में आगे की ओर पसलियाँ लगी हैं। इनके भीतर हमारा हृदय है, जो खून को चारों ओर भेजने वाला मांस का एक कोमल पिंड है। आजू-बाजू दो फेफड़े हैं, जिनसे हम साँस लेते और बाहर फेंकते हैं। ये फेफड़े हमारे खराब खून को साफ करते हैं। इनमें जब हवा भर जाती है तब ये फूलते और ऊपर को उठ आते हैं। साँस खींचो, फेफड़ों को हवा से भर दो। देखो सीना चौड़ा हो गया है। उसमें के गड्ढे भर गये हैं। इस मेरुदंड के नीचे और सामने आमाशय ( वह थैली जिसमें हमारा खाया हुआ भोजन इकट्ठा रहता है और पचने के बाद नीचे आँतों में उतर जाता है ), अँतड़ियाँ तथा मूत्राशय ( जहाँ मूत्र ऊपर से बूँद बूँद करके उतरकर एकत्र होता रहता है ) आदि भीतरी अंग हैं।

हमारी सब नसें इसी मेरुदंड से निकलकर दूर-दूर फैलती हैं। कमर हरदम झुकाये रखने से फेफड़े सिकुड़ जाते हैं, पूरी पूरी हवा भीतर नहीं खींचते

और कम फूलते हैं। इस प्रकार कम साँस भरने से बीमारी अपना अड्डा जमा लेती है। यही कारण है कि वे मनुष्य जो कमर झुकाकर बैठते हैं, अक्सर दुबले-पतले और तङ्ग छाती वाले हो जाते हैं। झुक कर बैठने से हमारे आमाशय, हृदय और अँतड़ियों पर दबाव पड़ता है। इससे भोजन अच्छी तरह हजम नहीं होता। पाखाना भी साफ नहीं होता। इससे नाना प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं। सारा शरीर बेढङ्गा हो जाता है।"

जब पण्डितजी ये बातें बतला रहे थे, तब कुछ लड़के अपनी कमर को अन्दर घुमाकर बिल्कुल टेढ़े हो गये। उन्हें देख गुरुजी ने कहा, "देखो, इस प्रकार 'अकड़' कर बैठना भी अच्छा नहीं। मैं तुम्हें बिल्कुल सीधे बैठने को कहता हूँ। जब राह चलो तब भी कमर सीधी करके, छाती कुछ फुलाके, सिर सीधे ऊपर को उठाके, अपने कन्धों को पीछे खींचे हुए और नजर सामने रख कर चला करो। कुछ ही दिनों में तुम्हें इस प्रकार चलने और बैठने का अभ्यास हो जायगा।"

प्रभानाथ अब समझ गया कि जो-जो बातें पण्डितजी ने कहीं सब सच थीं। उसने तभी से मन-ही-मन सीधे

बैठने और चलने की प्रतिज्ञा कर ली और उसी प्रकार बैठने-उठने लगा।

प्रश्न

१—प्रभानाथ देखने में कैसा प्रतीत होता था?

२—पण्डितजी ने उसकी हालत देखकर क्या कहा?

३—पण्डितजी ने प्रभानाथ के बैठने के ढङ्ग में क्या दोष बतलाया

४—झुककर बैठने से क्या हानि होती है?

५—झुककर बैठने से फेफड़ों को किस प्रकार हानि पहुँचती है?

६—चलते समय शरीर को कैसा रखना ठीक है?

---

## ११—नागपंचमी

श्रावण के शुक्ल पक्ष में पञ्चमी को 'नागपञ्चमी' होती है। इस दिन नागों की पूजा होती है और अनेक स्थानों में बड़े बड़े मेले लगते हैं।

नागपञ्चमी के दिन घर के द्वार के दोनों ओर की दीवार गोबर से लीपकर पवित्र करनी चाहिए। फिर सोना, चाँदी, लकड़ी या मिट्टी की कलम लेकर हल्दी और चन्दन से पाँच फन वाले पाँच पाँच नाग बनाने चाहिए। धूप, दीप, पुष्प आदि से नागों की पूजा

करके उन्हें लावा. खीर और पंचामृत का भोग लगाना चाहिए । पुनः ब्राह्मणों को खीर और लड्डू खिलाना चाहिए । नागपञ्चमी के दिन भूमि खोदने की मनाही विशेष रूप से की गई है । संभवतः इसका कारण नीचे लिखी कथा से कुछ संबन्ध रखता है :—

किसी नगर में एक गरीब किसान रहता था । खेती-बारी से ही उसकी जीविका चलती थी । उसके परिवार में स्त्री, एक कन्या और दो पुत्र थे । एक दिन उसके खेत जोतते समय हल के नीचे दबकर एक नागिन के तीन बच्चे मर गये । इससे नागिन को बहुत क्रोध आया । वह देर तक वहीं फन पटक-पटक कर दुःख करती रही । फिर बदला लेने के विचार से किसान के घर की ओर चल पड़ी ।

किसान के यहाँ आकर, उसने उसको, उसकी स्त्री और दोनों पुत्रों को बारी-बारी से लपेटकर डस लिया । जब उसकी कन्या को डसने चली तब वह बहुत डरी । उसने नागिन के सामने दूध रख दिया । फिर वह उससे प्रार्थना करने लगी । वह श्रावण शुक्ल पंचमी का दिन था

नागिन लड़की की पूजा से सन्तुष्ट हो गयी । उससे

वरदान माँगने को कहा। लड़की ने वर माँगकर अपने माता-पिता और भाइयों को जिला लिया। कहते हैं तभी से इस त्योहार का आरंभ हुआ, और तभी से नागों की पूजा हमारे बीच प्रारंभ हुई।

किन्तु, यह दन्तकथा मात्र है। इसकी सत्यता के विषय में कुछ प्रमाण नहीं मिलता। कुछ अन्य कथाएँ

इन मेरी दोनों आँखों में
हँसकर सुधा-बूँद टपकाओ
मेरे प्यारे बेटे आओ

प्रश्न

१—तुम्हारी समझ में ऊपर लिखी हुई बात कौन किससे कह रहा है ?

२—'जी की कली खिलाओ', 'आँखों में सुधा-बूँद टपकाओ'—इनके क्या अर्थ हैं ? इन्हें अपने बनाये हुए वाक्यों में प्रयुक्त करो।

३—'उमग कर खेलने' और साधारण तौर से खेलने में क्या अन्तर है ?

---

## १३—श्रवणकुमार

बहुत दिन की बात है। राजा दशरथ अयोध्या में राज करते थे। उन्हीं के राज्य में एक गरीब बूढ़ा आदमी था। वह अन्धा था। उसकी स्त्री भी अन्धी थी। बेचारे बड़ी कठिनता से अपने दिन काटते थे। उनके एक लड़का था। उसका नाम श्रवण था।

अकेला श्रवण अपने माँ-बाप की सारी सेवा-टहल किया करता—अपने हाथ से पानी लाकर उनको

नहलाता, कपड़े पहनाता, कपड़े धोता, रोटी बनाकर खिलाता । वह हर घड़ी उनकी ही सेवा में लगा रहता ।

जब कहीं श्रवण के माँ-बाप कहीं तीर्थ-यात्रा के लिए जाना चाहते तब श्रवण उनको बँहगी में बैठाकर वहाँ ले जाता ।

एक रात श्रवण के माँ-बाप को प्यास लगी । उस समय पास में पानी न था । अँधेरी रात थी । श्रवण पानी भरने के लिए घड़ा लेकर नदी को गया । राजा दशरथ भी उसी समय उसी जंगल में शिकार खेल रहे थे । राजा 'शब्दभेदी' बाण चलाने में बड़े चतुर थे । वे तीर का ऐसा निशाना लगाते थे कि जहाँ से कोई आवाज आती हो वहीं उसी आवाज पर उनका तीर जा लगता था । दूर से, बिना देखे, किसी जीव की आवाज को सुनते ही उसपर अचूक निशाना लगाते थे ।

जिस समय श्रवण नदी से घड़े में पानी भरने लगा उस समय उसके पानी में डूबने से भक-भक आवाज हुई । उसको सुनकर राजा दशरथ ने समझा कि जंगली हाथी पानी पी रहा है । यह उसी की आवाज है । उन्होंने एक तीर उसी

आवाज को निशाना बना कर छोड़ दिया। वह श्रव
की छाती में जा लगा।

राजा दशरथ ने जाकर देखा तो वहाँ एक लड़
पड़ा कराह रहा था। यह देख राजा को बहुत दुः
हुआ। राजा ने अपने हाथ से श्रवण के शरीर से तं

श्रवणकुमार

निकाला। श्रवण को बहुत ढाढ़स बँधाया, पर उस समय क्या हो सकता था!

श्रवण ने राजा से कहा, कुटी में मेरे माँ बाप हैं। वे अन्धे हैं। उनको प्यास लग रही है। तुम उनको पानी दे आओ। मैं तो अब जाने लायक रहा नहीं।

इतना कहते-कहते श्रवण के प्राण छूट गये। राजा घड़ा लेकर कुटी में पहुँचे। श्रवण के पिता-माता के सामने पानी रख दिया और चुपचाप खड़े हो गये।

अन्धों को अपने बेटे के न बोलने पर आश्चर्य हुआ। इस पर राजा ने बूढ़े और बुढ़िया के पैर पकड़ कर सारी दुर्घटना कह सुनाई। श्रवण का मरना सुनते ही अन्धे फूट-फूट कर रोने लगे। अन्त में वे श्रवण के शव को अपनी गोद पर रखे हुए चल बसे।

धन्य है उनका पुत्र-प्रेम और धन्य है श्रवण की पितृ एवं मातृ-भक्ति।

प्रश्न

१—श्रवणकुमार कौन थे ? उनका अपने माता के प्रति कै
व्यवहार था ?

२—राजा दशरथ ने श्रवण को क्यों मारा ?

३—श्रवण की मृत्यु का समाचार जानकर उसके माता-पित
क्या किया ?

४— इस पाठ में दिये हुए चित्र में श्रवणकुमार क्या करता हु
दिखाया गया है ? उसका बाप कौन है और माँ कौन ? वे किसमें
पड़े हैं ?

---

## १४—रेशम के कीड़े

बालको, रेशमी कपड़े तुम लोगों ने अवश्य
देखे होंगे। ये कपड़े कितने चिकने और मुलायम
होते हैं। तुम्हें यह सुनकर बड़ा आश्चर्य होगा कि
रेशमी सूत के लच्छे एक प्रकार के कीड़ों से उत्पन्न
होते हैं।

रेशम का कीड़ा ठीक तितली के समान होत
है। इसके छः पाँव, चार डैने और मुँह के दोनों
बगल मूछ के समान दो गुच्छे होते हैं। वहाँ
के लोग इन कीड़ों को पालते हैं। यहाँ रेश

की खेती होती है। उन खेतों में शहतूत के पौधे लगाये जाते हैं, जो ऊँचाई में आदमी के क़द से बड़े नहीं होते। इसी पौधे का पत्ता रेशम के कीड़े का आहार है। इन पत्तों को कीड़े इस प्रकार खाते हैं कि तूत का पेड़ प्रायः ठूंठ-सा हो जाता है।

कीड़े तूत के पत्ते पर मकड़ी के समान जाल बुनते हैं। जाल ही में वे अंडे देते हैं। खेतिहर उन अंडों को सावधानी से उठाकर एक गमले में रखता है। उन्हीं में से सूत का लच्छा निकाला जाता है।

सूत निकालने का भी एक विशेष ढंग है। पहले प्रत्येक अंडे को गर्म पानी में भली भांति उबालते हैं। उसके बाद उस अंडे में से बारीक तार के समान बहुत ही महीन सूत निकलता है। इसी प्रकार तीन-चार अंडों में से तार निकालकर खेतिहर उन सब तारों के छोर को इकट्ठा कर हाथ से पकड़ लेता है और दाहिने हाथ से एक लट्टू में लपेटता जाता है। सूत का तार इतना महीन होता है कि वह दिखलाई भी नहीं पड़ता, अतएव वह छः या आठ तारों को इकट्ठा करके

लपेटा जाता है। पीछे वही सूत धूप में सुखाया जा
है। तब उसे गर्म पानी में भिगो कर ममाले के प
से भली भाँति साफ किया जाता है। इतनी क्रिया
बाद सूत में चमक पैदा होती है।

अच्छा सूत इसी तरीके से बनाया जाता
अंडे उबालकर बनाया हुआ सूत बहुत ब
होता है और उसका दाम भी अधिक होता
जो सूत अंडों को अलग रख कर केवल रेशम
जालों से तैयार होता है, वह घटिया और म
होता है।

प्रश्नावली

१—रेशम के कीड़ों से मिलता-जुलता कोई कीड़ा बतलाओ।

२—रेशम का कीड़ा किस प्रकार पाला जाता है?

३—रेशम जिस प्रकार निकाला जाता है, उसका संक्षेप में करो।

४—बढ़िया रेशम कैसे प्राप्त होता है?

५—घटिया और बढ़िया रेशम में क्या अन्तर है?

---

## १५—रहीम के दोहे

ज्यों 'रहीम' जस होत है, उपकारी के संग
बाँटन वारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग॥

खीरा सिर से काटिये, भरिये नमक बनाय।
'रहिमन' करुए मुखन को, चहियत यही सजाय ॥२॥
'रहिमन' वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुये, जिन मुख निकसत नाहिं ॥३॥
'रहिमन' देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डार।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवार ? ॥४॥
जे गरीब सों हित करैं, धनि 'रहीम' वे लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण-मिताई-योग ? ॥५॥
जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥६॥
'रहिमन' नीचन-संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलाली हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि ॥७॥
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
'रहिमन' बिगरे दूध को, मथे न माखन होय ॥८॥
'रहिमन' चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर ॥९॥
'रहिमन' विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥१०॥

प्रश्नावली

१—मेंहदी की पत्तियाँ किस रङ्ग की होती हैं ? उनको पीसकर हाथ में लगाने से उनका रङ्ग कैसा हो जाता है ?

२—'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवार ?'—इसका अर्थ समझाओ।

३—कृष्ण और सुदामा की मित्रता के विषय में तुम जो कुछ जानते हो उसे लिखो ?

४—कङ्गाली के हाथ में दूध देख कर लोग उसे क्या समझते हैं और क्यों।

५—थोड़े दिन की विपत्ति से क्या लाभ होता है ?

---

## १६—आल्हा-ऊदल

महोबा के राजा परमाल के यहाँ दसराज, बछराज आदि चार सरदार थे। परमाल की रानी मल्हना के पास एक सुन्दर नौलखा हार था। माँडोगढ़ के राजकुमार कृपासिंह ने उसे लेने के लिए महोबा पर आक्रमण किया। दसराज और उसके साथी परमाल की ओर से इतनी वीरता से लड़े कि उन्होंने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिये। माँडो की सेना हार कर लौट गई।

राजा परमाल ने इस विजय के बदले में इन लोगों का बड़ा सम्मान किया। उनको जागीर भी दी। कुछ दिनों बाद दसराज और बछराज ने ग्वालियर की दो राजकुमारियों से विवाह किया। इनसे दसराज के आल्हा और ऊदल तथा

बछराज के मलखान और सुलखान नामक पुत्र हुए।

ऊदल और सुलखान के जन्म के कुछ दिन पहले माँडो के सैनिकों ने पिछली हार का बदला लेने के लिये छापा मारा और दसराज, बछराज के सर काटकर नौलखा हार ले गये। जब बालक बड़े हुए तब उनको यह बात मालूम हुई। उन्होंने एक बड़ी सेना लेकर माँडो पर चढ़ाई कर दी। वहाँ के राजा को हरा कर वे सब माल लूट लाये। इसके बाद कई लड़ाइयों में उन्होंने अपनी वीरता और साहस का परिचय दिया। उनकी वीरता दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गई। इन योद्धाओं के कारण महोबा पर चढ़ाई करने का किसी को साहस न होता था।

जब दिल्ली के राजा पृथ्वीराज की लड़की बेला विवाह के योग्य हुई तब उस समय प्रचलित प्रथा के अनुसार पृथ्वीराज ने अपने लड़के ताहर और ब्राह्मण मंत्री चौंडा के हाथ तीन लाख का मूल्यवान टीका चंदेल के राजाओं के यहाँ भेजा। मलखान ने परमाल की ओर से उनके पुत्र ब्रह्मा के लिये यह सम्बन्ध स्वीकार कर लिया। बारात की

तय्यारियाँ होने लगीं । जब सब अतिथि गढ़
जमा हो गये तब बहुत सजधज कर बारात
लश्कर सात दिन में महोबा से दिल्ली पहुँचा । उ
समय विवाह के मुअवसर पर भी बहुधा आप
में लड़ाई हो जाया करती थी । इस विवाह में भ
बड़ी कठिनाइयाँ पड़ीं, परन्तु जहाँ-कहीं लड़ने व
अवसर आया आल्हा और ऊदल ने ऐसी वीर
दिखलाई कि दिल्ली वाले दंग रह गये । साल
के लिए विदा रुक गई । बारात मकुशल मह
लौट आई ।

साल पूरा होने पर भी किसी कारण विद
न हो सकी । अब परमाल का साला माहिल, ज
आल्हा ऊदल से डाह करता था, उसको भड़का
लगा कि ब्रह्मा का गौना होना चाहिए । पृथ्वीरा
ने परमाल की यह बात न मानी । अंत में लड़
की नौबत आ गई । ब्रह्मा सेना लेकर दिल्ली पहुँचा
यहाँ पृथ्वीराज के पुत्र ताहर ने उसका सामना किय
ब्रह्मा को गहरी चोट आई ।

जब यह समाचार महोबा पहुँचा तब आ
ब्रह्मा की सहायता के लिए दिल्ली गये । चालब
से वे बेला को ले आये । मृत्युशय्या पर पड़े

ब्रह्मा ने बेला से अच्छी तरह बातचीत भी न की, क्योंकि वह विश्वासघाती ताहर की बहिन थी। बेला अपनी पतिभक्ति को सिद्ध करने के लिए अपने पति के वस्त्र और अस्त्र-शस्त्र धारण कर दिल्ली गई और अपने पिता से दहेज न मिलने के बहाने युद्ध करने के लिये तत्पर हो गई। उसने ताहर का सर काट लिया। ब्रह्मा के प्राण निकलने वाले ही थे। अपनी स्त्री की वीरता और भक्ति तथा अपने शत्रु के अपमान का समाचार पाकर वह प्रसन्नचित्त परलोक सिधारा।

जब पृथ्वीराज को यह समाचार मिला तब वह बहुत बड़ी सेना लेकर महोबा पर चढ़ आये। उस समय वहां सती होने की सामग्री तैयार थी। बेला अपने पति का शव—लिए हुए चिता पर बैठी थी। ऊदल उसकी इच्छा के अनुसार चिता में अग्नि देने ही वाला था कि पृथ्वीराज ने उसे रोक दिया। क्योंकि ऊदल उस जाति का क्षत्रिय न था। इस पर युद्ध छिड़ गया।

इस परस्पर के युद्ध से महोबा और दिल्ली दोनों मिट्टी में मिल गये। परमाल और पृथ्वीराज को छोड़कर प्रायः सब प्रसिद्ध योद्धा काम आये। उनकी स्त्रियाँ सती

हो गई। कहा जाता है केवल आल्हा बच रहे। उसके अन्य सब भाई खेत रहे।

### संकेत

अस्त्र=ऐसे हथियार जिन्हें हाथ में पकड़े-पकड़े चलाते हैं, जैसे तलवार। शस्त्र=ऐसे हथियार जिन्हें फेंककर चलाया जाता है, जैसे तीर। *खेत रहना=युद्ध में मारा जाना।*

### प्रश्नावली

१—पृथ्वीराज और परमाल में बैर क्यों हुआ ?

२—इनके बीच जो युद्ध हुआ उसका हाल लिखो।

३—बेला ने यह कैसे सिद्ध किया कि वह पतिव्रता थी ?

४—बेला के कारण कैसे महोबा और दिल्ली दोनों मिट्टी में मिल गये ?

५—नीचे लिखे मुहाविरों के अर्थ बतलाओ और उनका प्रयोग वाक्यों में करो :—

छक्के छुड़ा दिये, खेत रह गये, मिट्टी में मिल गये।

६—नीचे लिखे वाक्यों में जहाँ ज़रूरत हो संज्ञाओं के स्थान में सर्वनाम लिखो—

*पृथ्वीराज को यह समाचार मिला। पृथ्वीराज बहुत बड़ी सेना लेकर महोबा आये। यहीं पृथ्वीराज की बेटी बेला, बेला के पति के साथ में साथ सती होने वाली थी। बेला के इच्छानुसार पृथ्वीराज ने बेला को सती न होने दिया।*

## १७—बहन

देखो लड़को, बहन तुम्हारी ।
कैसी है भोली औ' प्यारी ॥
उनके हाथ-पाँव हैं छोटे ।
पतले-पतले थोड़े-मोटे ।

लाल-लाल और गोरे-गोरे ।
जैसे किसी रंग में बोरे ॥
कितने आँखों को हैं भाते ।
कैसे हैं अच्छे दिखलाते ।

उनका धीरे-धीरे चलना,
कभी खेलना कभी मचलना,
दो-दो दाँतों को दिखलाकर,
उनका हँसना कुछ मुसकाकर,

तुतली बातें प्यारी-प्यारी,
उनका कहना बारी-बारी,
भला नहीं किसको ठगता है ?
किसे नहीं प्यारा लगता है ?

उसे [illegible] दुख देते हो ।
या [illegible] गोद लेते हो ॥

तब वह कैसी खिल जाती है ।
कैसी प्यारी दिखलाती है ।
तुम उसको मत कभी रुलाओ ।
मत छेड़ो, मत उसे डराओ ॥
जो है इतनी भोली-भाली,
थोड़े में खुश होने वाली,
बुरी बात है उसे रुलाना;
उसे छेड़ना और खिझाना ।
बातों से उसको बहलाओ ।
प्यार दिखाकर हँसो, हँसाओ ॥
अच्छे लड़के तभी बनोगे ।
औ' सबके प्यारे तुम होगे ॥

प्रश्नावली

१—बहन किन वस्तुओं के साथ में खेला करती है ?

२—पुस्तक की भाषा में और तुम्हारी बोली में जो अन्तर हो उसे दो-चार शब्दों का उदाहरण के लिए अलग दिखाओ ।

३—लिखे आये हैं छेड़ना, खिझाना, बहलाओ, सब के प्यारे—इनको ध्यान लगाते हुए वाक्यों में प्रयोग करके इनका अर्थ स्पष्ट करो ।

---

ध्रुव

"बेटा, रोओ मत । चिन्ता मत करो । भगवान सबके सहायक हैं। उनका भजन करो। वही सबके दुःख दूर करते हैं।"

बालक ध्रुव माता से आज्ञा लेकर वन की ओर चल पड़े । वहाँ नारदजी मिले । उन्होंने पहले परीक्षा ली; कहा, "भगवान के दर्शन पाना सहज नहीं है। बड़े-बड़े विघ्न सामने आवेंगे । तुम अभी बालक हो। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी उनके दर्शन नहीं पाते । तुम घर लौट जाओ।" ध्रुव ने कहा, "नहीं नारदजी, मैं प्राणों की होड़ लगाकर भगवान् के दर्शन करूँगा । उन्हें पाये बिना मैं अब घर नहीं लौट सकता। चाहे तन रहे या जाय, भगवान् से अवश्य मिलूँगा।"

नारदजी चले गये । ध्रुव ने एक जगह बैठ कर तप करना आरम्भ कर दिया। किसी प्रकार का विघ्न उनको डिगा न सका। भगवान् ने प्रसन्न होकर उनको दर्शन दिया । उनके आनन्द की कोई सीमा न रही। भगवान् ने उन्हें राजसी ठाट का सब सामान-फौज, खजाना, हाथी, घोड़े इत्यादि—प्रदान किया । किन्तु उन्होंने स्वयं कुछ माँगा नहीं, केवल उनकी भक्ति और कृपा चाही।

सुनकर पुकार ईश्वर ने
वर्षा को निकट बुलाया ।
'गरमी को मार भगाओ'
उसको आदेश सुनाया ॥

घोड़े पर चढ़ी हवा के
मेघों की सेना सजकर ।
बिजली का खड्ग घुमाती
'वर्षा' तब चली गरजकर ॥

आकर उसने सेना को
नभ-मंडल में फैलाकर ।
गरमी को मार भगाया
बूँदों के बाण चलाकर ॥

गरमी का राज्य गया अब
रह गई न तनिक निशानी ।
सबको सुख देने आई
वर्षा ऋतुओं की रानी ॥

जो सबको तपा रहा था
वह सूरज बड़ा गुमानी ।
छिप करके अब चलता है,
स्वच्छन्द विचरते प्राणी ॥

उजड़ी-सी इस दुनिया को
फिर हरी भरी कर डाला।
'राघव', वर्षा तू धन[1] है,
तेरा है काम निराला ॥

### प्रश्नावली

१—ईश्वर ने वर्षा को क्यों और कब बुलाया? उससे क्या कहा!

२—वर्षा ने गर्मी को भगाने के लिए क्या तैयारी की?

३—गर्मी किस प्रकार भगाई गई?

४—वर्षा में किसान और मोर क्या-क्या करते हैं?

५—ग्रीष्म, नभमंडल, गुमानी, स्वच्छन्द, दादुर, रोपेंगे.. इन शब्दों का प्रयोग अपने बनाये हुए वाक्यों में करो।

---

## २०—डाक-घर

मोहन और गोपाल दो चचेरे भाई हैं। मोहन १३ वर्ष का है और ७ वीं कक्षा में पढ़ता है; गोपाल ८ वर्ष का है और प्रथम श्रेणी में पढ़ता है। एक दिन जब मोहन अपने पिता को पत्र लिख रहा था, तब गोपाल एक गेंद उछालता हुआ उसके कमरे में आया और मोहन से बोला, "चलो, मैदान में चल कर गेंद खेलें। देखो, यह

१—धन्य।

गेंद मैं आज ही मोल लाया हूँ, कैसा अच्छा है !"

मोहन—"गोपाल, ठहरो, पहले यह पत्र, जो पिता जी को रुपये भेजने के लिए लिखा है, पोस्ट आफ़िस में छोड़ आऊँ। फिर खेलने चलूँगा।"

गोपाल—"दादाजी, 'पोस्ट आफ़िस' क्या है?"

मोहन—जिस दफ़्तर से पोस्ट-कार्ड वगैरह आते हैं उसे पोस्ट आफ़िस या डाकघर कहते हैं?"

गोपाल—"पोस्टकार्ड ! पोस्टकार्ड किसे कहते हैं?"

गोपाल—"यह जो चौकोर कागज का टुकड़ा है इसे पोस्टकार्ड कहते हैं। देखो, इसके एक तरफ़ कोने पर जो हरे से रंग की छोटी तसवीर बनी है यह बादशाह पंचम जार्ज की तसवीर है और इसी के नीचे छोटे-छोटे अक्षरों में अँगरेजी में [illegible] ( तीन पैसा ) लिखा है और ऊपर की ओर India Postage ( इंडिया पोस्टेज ) लिखा है। बड़ी तसवीर की बाईं ओर हटकर एक छोटी-सी तसवीर और है। इसके ऊपर बड़े बड़े

अक्षरों में लिखा है हिंदुस्थानी पोस्टकार्ड (India Post Card)। इस छोटी तसवीर के नीचे एक सीधी लकीर है। उसके दाहिनी ओर पता लिखने के लिए स्थान होता है और बाईं ओर पत्र का हाल लिखा जा सकता है। यदि कोई दाहिनी ओर भी हाल लिख दे तो वह पोस्टकार्ड 'बेअरिंग' हो जाता है। उस दशा में पत्र पाने वाले को पत्र के लिए आध आना देना पड़ता है। कभी-कभी दो पोस्टकार्ड एक ही में जुड़े हुए देखे जाते हैं। इनको जवाबी पोस्टकार्ड कहते हैं। उनमें से एक पत्र लिखने के लिए होता है और दूसरा हिस्सा, जिसमें कि छोटी तसवीर के नीचे Reply (जवाब) लिखा होता है, उत्तर लिखने के लिए होता है। उसमें केवल पते की जगह पर पत्र लिखने वाले का पता लिखा रहता है। जवाबी पोस्टकार्ड छः आने को मिलता है और सादा पोस्टकार्ड तीन पैसे को।"

गोपाल—"अगर पोस्टकार्ड पर यह हरी तसवीर न हो तो?"

मोहन—"तो भी कोई हर्ज नहीं। कुछ पोस्टकार्डों पर ऐसी तसवीर नहीं होती, फिर भी वे भेजे जा सकते

है। मगर उस हालत में कार्ड पर तीन पैसे का टिकट लगाना पड़ता है।"

गोपाल—"क्या टिकट भी पैसे-पैसे वाले और दो-दो पैसे वाले और होते हैं?"

मोहन—"हाँ, टिकट कई तरह के होते हैं। वे एक पैसे से लेकर दो पैसे, एक आने, पाँच पैसे, दो आने, तीन आने, चार आने, छ आने आठ आने, बारह आने और एक रुपये तक के होते हैं।"

गोपाल—"इन सब टिकटों में अन्तर क्या होता है?"

मोहन—"इन सब टिकटों पर बनी हुई तसवीरें तो ठीक पोस्टकार्ड पर बनी हुई तसवीर की तरह की होती हैं, मगर इनके रङ्ग अलग-अलग होते हैं और सब में अलग-अलग कीमत भी अंग्रेजी में लिखी होती है। रुपये वाला टिकट और टिकटों से बड़ा होता है।"

गोपाल—"टिकट मिलते कहाँ हैं?"

मोहन—"ये पोस्ट आफिसों में बिका करते हैं, वहाँ से चाहे जो खरीद सकता है। पोस्टकार्ड वगैरह भी वहीं बिकते हैं।"

गोपाल—"किन्तु दादाजी, पोस्टकार्ड तो बहुत छोटे होते हैं। यदि किसी को बहुत हाल लिखना हो तो वह क्या करे?"

मोहन—"वह अपना समाचार एक कागज़ पर लिखकर उसको एक लिफाफे में बन्द करके और उस पर एक आने का टिकट लगाकर लिफाफे पर पता लिखकर पोस्टकार्ड की भाँति भेज सकता है। कुछ लिफाफे ऐसे होते हैं जिन पर एक आने का टिकट छपा रहता है। उन पर फिर टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं रहती।"

गोपाल—"क्या हम जितना कागज़ चाहें उतना बड़ा कागज़ लिखकर एक आने में जहाँ चाहें वहाँ भेज सकते हैं?"

मोहन—"नहीं, एक आने के टिकट में लिफाफा के सहित तोल में आधा तोला तक और पाँच पैसे के टिकट में लिफाफा के सहित ढाई तोला वज़न का कागज़ भारत वर्ष में जहाँ चाहो भेज सकते हो। इससे अधिक वज़न के लिए, तोल के अनुसार और अधिक टिकट लगाने होंगे। यदि तुम भारतवर्ष के अतिरिक्त विदेशों को पत्र भेजना चाहो तो कुछ अधिक दाम देने पड़ेंगे। भिन्न-भिन्न

देशों के लिए टिकट की दर भिन्न-भिन्न है। यह डाक-खाना से मालूम कर सकते हो।"

गोपाल—"क्या पोस्ट आफिस में कोई ऐसा भी नियम है कि हम चिट्ठी जिसको भेजें उसके अतिरिक्त अन्य कोई उसे न पा सके और हमें इस बात की सूचना मिल जाय कि पत्र उसे मिल गया?"

मोहन—"हाँ, है। जो पत्र 'रजिस्टर्ड' करा दिये जाते हैं वे सिर्फ उन्हीं को मिलते हैं जिनके नाम उनकी 'रजिस्ट्री' होती है और उस पत्र में तीन आने का टिकट साधारण महसूल के अतिरिक्त लगाना पड़ता है। यदि तुम जानना चाहो कि पत्र उसी को मिला है या नहीं, तो एक आने का टिकट अधिक लगा देने से मालूम हो सकता है। इस दशा में एक कागज, जो कि पोस्ट आफिस से मुफ्त में मिलता है, पानेवाले के हस्ताक्षर के सहित तुम्हारे पास आ जायगा। इन दोनों दशाओं में तुमको पोस्ट आफिस से पहले ही एक रसीद मिल जायगी जिसका तात्पर्य यह होगा कि यदि तुम्हारा पत्र किसी कारण ठीक पते पर न पहुँचा या कोई और गड़बड़ी हो तो तुम उसके लिए पूँछताछ कर सको।"

गोपाल—"यदि चाचा जी कहीं बाहर चले गये होंगे तो यह पत्र फिर कैसे मिलेगा ?"

मोहन—इस पर जो पता लिखा है उसको काट कर वहाँ पर यदि उनका ठीक पता लिख दिया जाय तो जहाँ वे होंगे वहाँ यह पहुँच जायगा और किसी कारण वहाँ भी उन्हें पत्र न मिला तो जो मेरा पता मिरे पर लिखा है उससे मेरे पास लौट आयेगा।"

इस प्रकार बातचीत के समाप्त होते न होते वे पोस्ट आफिस आ पहुँचे। मोहन ने अपना पत्र, चिट्ठी छोड़ने वाले बक्स में, जिस पर अँग्रेजी में 'लेटर बाक्स' लिखा था, छोड़ दिया और गोपाल से कहा, "देखो, नीचे के टीन के टुकड़े पर जो समय लिखा है ठीक उसी समय पर सब पत्र इस बक्स से निकाल लिये जायँगे।"

गोपाल चिट्ठियों के बारे में यह सब हाल जानकर बड़ा खुश हुआ और गेंद खेलने के लिए मोहन के साथ मैदान की ओर चला गया।

प्रश्नावली

१—पोस्टकार्ड में पता लिखने के लिए कहाँ स्थान होता है ?

२—लिफाफे में कै पैसे का टिकट लगता है ?

३ — एक आने और एक पैसे के टिकटों के रंग कैसे कैसे होते हैं ?

४ — रजिस्ट्री कराने का क्या नियम है ?

५ — दो ऐसे काम बतलाओ जो डाकघर में होते हों, किंतु जिनका वर्णन इस पाठ में नहीं किया गया।

---

## २१—परोपकारी

जो पराये काम आता, धन्य है जग में वही।
द्रव्य ही को जोड़कर कोई सुयश पाता नहीं॥
पास जिसके रत्न-राशि अनन्त और अशेष है।
क्या कभी वह सुर-धनी[1] के सम हुआ मखिलेश[2] है ?
आभरण नर-देह का बस एक पर-उपकार है।
हार को भूषण कहे, उस बुद्धि को धिक्कार है॥
स्वर्ण की जंजीर बांधे स्वान फिर भी स्वान है।
धूलि-धूसर भी करी[3] पाता सदा सम्मान है॥२
लाभ अपने देश का जिनसे नहीं कुछ भी हुआ।
जन्म उनका व्यर्थ है, जल के बिना जैसे कुआ॥
इस जगत में वन्य-पशु से भी निरर्थक है वही।
क्योंकि पशु के चर्म से तो काम लेती है मही॥३
मान-मर्यादा-रहित जीवन वृथा ही जानिए।
स्वार्थ-रत को यश नहीं मिलता, इसे सच मानिए॥

---

१—कुबेर। २—यज्ञ का स्वामी। ३—हाथी।

पेट भरने के लिए तो उद्यमी है श्वान भी।
क्या अभी तक है मिला उसको कहीं सम्मान भी ॥४

प्रश्नावली

१—लोग परोपकारी की प्रशंसा क्यों करते हैं ?

२—अपने देश का जिससे उपकार नहीं हुआ उसके विषय में कवि क्या कहता है ?

३—मलिलेग, कर्मेर, निरर्थक, मर्यादा, स्वार्थ-रत - इन शब्दों के अर्थ बतलाओ। इनका प्रयोग अपने बनाये हुए वाक्यों में करो।

---

## २२—माता को पत्र

मध्यमेश्वर,
काशी
ता० ७ अप्रैल, १९३१

स्नेहमूर्ति माँ,

परीक्षा अति निकट होने के कारण आपको पत्र विलम्ब से भेज रहा हूँ; पर इसका अर्थ यह नहीं है कि आपका प्रेम-स्मरण भी मुझको विलम्ब से आता है। मैं तो नित्य प्रातःकाल उठते ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसी दयालु स्नेहशीला और आदर्श माता सब को दें।

उस दिन गुरु जी ने बतलाया था कि ईश्वर केवल दया तथा कृपा का पाठ सीखने के लिए माता को देता है। मुझे आप की सभी शिक्षाएँ याद हैं। मैं पढ़ाई में त्रुटि नहीं करता। यदि मैं अपढ़ रहूँगा तो आपकी बद-नामी होगी, क्योंकि मैंने पढ़ा है कि 'जिन माँ के पुत्र का नाम गुणियों की गणना में नहीं आता उन (माता) को पुत्रवती नहीं कहना चाहिए।' नहीं माँ, मैं तुम्हारा ऐसा अपमान न होने दूँगा।

मेरे छोटे भाई-बहनों से मेरा आशीष कहिएगा। बड़ों को साष्टांग प्रणाम।

आपका दास,

विनोद

लिफाफा

टिकट

श्रीमती उमादेवी त्रिपाठी, बी० ए०
२४, [illegible] बाग, लखनऊ

प्रश्नावली

१—इसी प्रकार एक पत्र अपने मित्र को लिखो। उसमें उससे इस महीने की पढ़ाई का हाल पूछो।

२—भाई को पत्र भेजने पर लिफाफे पर पता कैसे लिखोगे?

भारत में बीरबल और अकबर की सैकड़ों मनोरञ्जक कहानियाँ प्रचलित हैं। उनसे बीरबल के जीवन, और उनसे अकबर की मित्रता पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ता है। लगभग १५८५ ई० में अफगानिस्तान में मुगल-सैन्य का सञ्चालन करते समय अफरीदियों[1] के हाथ से लड़ाई के मैदान में बीरबल की मृत्यु हुई। बीरबल की मृत्यु से बादशाह अकबर को अत्यन्त दुःख हुआ।

प्रश्नावली

१—राजा बीरबल कौन थे? उनका नाम इतना मशहूर क्यों हुआ?

२—अकबर का बीरबल के साथ कैसा व्यवहार था?

३—बीरबल की मृत्यु किस प्रकार हुई?

४—अकबर के दरबार में बीरबल के समान और कौन कौन विद्वान थे? यदि किसी का नाम तुम्हें मालूम हो तो बतलाओ।

५—क्या तुमने बीरबल का कोई चुटकुला कभी सुना है? यदि हाँ, तो उसे लिखो।

६—नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया बतलाओ। उनमें से कौन सकर्मक और कौन अकर्मक है?

अकबर बीरबल का घनिष्ट मित्र बन गया।

बीरबल की मृत्यु हुई।

बादशाह को अत्यन्त दुःख हुआ।

---

१—अफगानिस्तान में रहने वाले मुसलमानों की एक जाति का नाम।

## २४—जटायु का आत्मत्याग

[ जब रावण सीता को हर कर लङ्का ले जा रहा था तब उनका रोना सुनकर गीधराज जटायु उनका उद्धार करने के लिए चले गए। उनके लिए रावण जैसे बलवान को हराना कठिन था। किन्तु फिर भी उन्होंने युद्ध में रावण के दाँत खट्टे कर दिये। अन्त में, परोपकार के लिए, उन्होंने स्वयं अपने प्राण दे दिये। गोस्वामी तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' से इस प्रसङ्ग को नीचे उद्धृत किया गया है। ]

गीधराज सुनि आरत बानी।
रघु-कुल-तिलक-नारि पहिचानी॥
अधम निसाचर लीन्हे जाई।
जिमि मलेच्छ बस कपिला गाई॥

अहह प्रबल बल मम तन नाहीं।
तदपि जाय देखौं बल नाहीं॥
सीते पुत्रि, करसि जनि त्रासा।
करिहौं जातुधान कै नासा॥

धावा क्रोधवंत खग कैसे।
छूटै पवि पर्वत पैं जैसे॥
रे रे दुष्ट, ठाढ़ किन होही?
निर्भय चलेसि, न जानेसि मोही!

आवत देखि कृतान्त समाना।
फिरि दसकंधर कर अनुमाना॥

१—सीता का विलाप सुनकर गीधराज ने क्या कहा ?

२—रावण और गीधराज में क्यों युद्ध हुआ ? कौन जीता ?

३—इस युद्ध का हाल लिखो ।

४—नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध संस्कृत (अर्थात् तत्सम) रूप लिखो ।

भारत, निसाचर, दसानन, सुरेस ।

५—अर्थ लिखो—

राम रोष ·· तीरा

दसमुख उठि ·· बाना

६—खगपति कौन है ? उसके पाँच अन्य नाम बतलाओ ।

---

## २५—दुम किस काम आती है ?

एक बकरा था । उसके एक छोटी-सी दुम थी । प
उसकी समझ में नहीं आता था कि वह दुम से क्या
काम ले । एक दिन उसने एक कुत्ते से पूछा, "भ
साहब, तुम अपनी दुम से क्या काम लेते हो ?" कुत्ते
जवाब दिया, "मेरी दुम बचपन में ही काट ली गई थी
इसलिए मुझे दुम से काम लेने का अवसर नहीं पड़ा
पर मेरी माँ मुझसे कहा करती थी कि कुत्ते जब अ

नदी में कुछ मछलियाँ थीं। वे अपनी दुम के सहारे तैर रही थीं। घड़ियाल थे, वे भी दुम के सहारे तैर रहे थे। बकरा मछलियों से कुछ पूछता, पर घड़ियालों को देखकर सहम गया। सोचने लगा कि घड़ियालों से यह सवाल करना ठीक नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि वे दुम घुमाकर मारें और मेरा काम तमाम हो जाय।

इसी समय बकरे ने घास पर एक कीड़े को देखा। इस कीड़े की दुम में दो कांटे-से लगे थे। उनमें से एक मक्खी उड़ा रहा था और मुँह फैलाकर उसे डरा भी रहा था। जब मक्खी उड़ गई तब कीड़े ने अपना असली रूप धारण कर लिया। वह वैसा ही कीड़ा था जैसा हम हरी घास पर और पेड़ों की पत्तियों पर बहुधा देखते हैं। बकरा सोचने लगा कि मैं भी अपनी दुम से कीड़े का काम ले सकता तो क्या बात थी!

अब बकरा बड़े सोच में पड़ा। वह विचारने लगा कि दुनिया में जितने जीव हैं, सब अपनी अपनी दुम से कुछ न कुछ काम लेते हैं। केवल मैं ऐसा हूँ जो दुम से काम लेना नहीं जानता।

मेरा जन्म सृष्टि के आरम्भ में हुआ था। मु
पर पहले सभी घृणा करते थे। मैं तब जङ्गल में
थी। कुछ दिन बाद मेरे दिन फिरे।

त्रेता युग आया। राम-लक्ष्मण का जन्म हुआ।
वे बन गये। लंका पहुँचे। वहाँ उन्होंने रावण से यु
ठान दिया। बन्दरों और रीछों ने राम का साथ दिया
पर उनके पास लड़ाई के हथियार न थे। उन्होंने वृक्षों
की डालियाँ तोड़-ताड़कर रावण की सेना का सामना
किया। रामचन्द्रजी विजयी हो गये। वास्तव में लोगों
को पहले-पहल मेरे दर्शन तभी हुये।

राम-रावण के युद्ध में मेरा काम देखकर लोगों
ने मेरा बहुत आदर किया। सुन्दरता-प्रिय होने से
लोग मुझे सुन्दर बनाने के प्रयत्न में लग गये। मेरी
सेवा करने के लिए कुछ लोग नियत कर दिये गये।
आगे चलकर ये लोग कुंडेर कहलाये। कुंडेरों ने मुझे
खूब रगड़ा। यहाँ तक कि मेरी खाल उतार ली। इससे
मुझे बहुत दारुण वेदना हुई; परन्तु सुन्दरी बनने के
लोभ से धैर्य धारण किये हुए मैं सब कष्ट सहती रही।

इतने से भी लोगों को सन्तोष न हुआ। उन्होंने
मेरे लिए अनेक प्रकार के गहने बनवाये। इस त

बन-ठनकर मैं राजा के महलों तक पहुँची। वहाँ पहरा देने वाले मुझे लेकर अपना काम पूरा करने लगे। फिर तो मुझे सभी चाहने लगे।

मैं हरदम कुछ लोगों के साथ रहने लगी। उनकी सहायक और मित्र हुई। तभी तो मेरी प्रशंसा में गिरिधर कविराय ने कहा :—

लाठी मे गुन बहुत हैं, सदा राखिये संग।
गहरे नद-नारा जहाँ, तहाँ बचावे अंग॥
तहाँ बचावे अंग, झपटि कुत्ते को मारे।
दुश्मन दावागीर होय, ताहू को झारे॥
कह गिरधर कविराय, सुनो हो मेरे पाठी।
सब हथियारन छाँड़ि, हाथ में लीजै लाठी॥

इस तरह, घोर विपत्ति के समय भी मैं सहायता करने से मुख नहीं मोड़ती। मैं बूढ़ों की सहायता करने वाली युवकों का साहस बढ़ाने वाली और बालकों को खुश रखनेवाली हूँ। मेरे व्यवहार में निपुण मनुष्य को कहीं कोई भय नहीं होता। अपने अंग-प्रत्यंग को बलवान बनाने के लिए पहलवान मेरा आश्रय लेते हैं। मेरा आदर करनेवाला मनुष्य सचमुच सर्वत्र आदर पाता है।

### प्रश्नावली

१—लाठी किस वस्तु की बनी होती है ?

२—लाठी की जाति की कुछ अन्य वस्तुओं के नाम बतलाओ, जिनसे इसी के से काम लिये जाते हों।

३—लाठी के गुणों का वर्णन करो।

४—लाठी के सम्बन्ध में गिरधर कविराय की क्या राय है ?

५—नीचे रेखांकित शब्द व्याकरण से क्या हैं—

उनकी सहायक और मित्र हुई।

इससे मुझे वेदना हुई, परन्तु सुन्दरी बनने के लोभ से मैं यह कष्ट सहती रहती।

---

## २७—माँ के लाल

[ कंठाग्र करने के लिए ]

पुत्र का प्रश्न—

छोटे-छोटे बच्चे अम्माँ,
बस्ती-बाहर पड़े हुए हैं।
देखो जगह-जगह से तम्बू,
डण्डों के बल खड़े हुए हैं।
हाफ पैण्ट, खाकी कमीज़ ये
तन पर धारण किये हुए हैं।
एक-एक रूमाल सभी के
गले गले में पड़े हुए हैं।

पुत्र—

मॉं, मैं भी इन लोगों में अब
बड़ी खुशी से मिल जाऊँगा।
इनका सा ही काम करूँगा,
"मॉं का लाल" कहा जाऊँगा।

प्रश्नावली

१—तुम्हारे साथियों में से क्या कोई बालचर है? उसकी पोशाक का वर्णन करो।

२—'हाफ़ पैंट' कहाँ पहना जाता है?

३—बालचर क्या क्या काम किया करते हैं?

४—'माँ के लाल' से यहाँ किससे अभिप्राय है? क्यों?

---

## २८—चिड़ियों का संसार

चिड़ियां भी मनुष्य की तरह रात को अपने बच्चों को लेकर अपने घोंसले में चुपचाप सोया करती हैं। यदि कोई मनुष्य किसी सघन वन में जिसमें पक्षियों के बहुत से खोते हों, रात को जाय तो उसको वहाँ पर वैसी ही शान्ति मालूम होगी जैसी कि कुछ रात बीते घनी बस्ती में मालूम होती है। परन्तु इस समय भी उड़ते रहने वाले लोगों में उल्लू और चिमगादड़ का नाम तुमने सुना

देश के उसी नगर में अथवा उसी गाँव में, उसी पेड़ पर या उसी घर में फिर खोता लगाती है, जहाँ उसने पिछले साल लगाया था।

कोयल, अबलखा और सारिका बड़े तड़के उठने वाली चिड़ियाँ हैं। लवा को भी लोग बहुत सवेरे उठने वाली चिड़िया बताते हैं; लेकिन अबलखा उससे भी सवेरे उठती है। वह थोड़ी देर तक उस पेड़ की डालियों पर, जिस पर उसका खोता होता है, इधर-उधर फुदकती और चहचहाती है, उसके बाद खाने की खोज में निकल जाती है। फिर छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, फुन, गोबरैले, घोंघे इत्यादि ले आती है। इसे दिन भर यही करते बीतता है।

एक मनुष्य ने दो अबलखी चिड़ियों को दिन भर में तीन सौ बार अपने खोते से कीड़े-मकोड़ों की खोज में जाते और कुछ न कुछ लेकर लौटते देखा। यह चिड़िया अपने बच्चों की रक्षा के लिए बड़ी सतर्क रहती है। इसलिए कभी-कभी जब उसे शिकार मिलने में विलम्ब होता है, तब यह बिना कुछ लिये ही अपने घोसले को

अपनी दोनों जोतें। और दो सौ रुपये जो उनके मिले थे वे कचहरी में जमा कर दिये। फिर वही उधार की मार और सूद की दौड़। थोड़े दिनों में जितना रुपया पहले ऋण था उतना ही फिर हो गया। अंत को कुर्की हुई। घर और उसका सारा सामान पैसे का छदाम में नीलाम हो गया। इस तरह दोनों के बने-बनाये घरों का सत्यानाश हो गया।

इन दोनों के गाँव में यदि पंचायती बंक होता तो वे इस तरह बरबाद न हुए होते।

पंचायती बंक किसानों के लिए बड़े लाभ की वस्तु है। यदि बोआई के समय किसान को बीज की आवश्यकता होती है और उसके पास उसके लिए रुपया नहीं होता तो पञ्चायती बंक उसको बहुत सस्ते मूल्य पर बीज देता है। यदि किसी को रुपये की आवश्यकता है और वह रुपया खेती के काम में लगाना हुआ तो यह बंक ऋण देता है, जिसे वह सुभीते से थोड़ा थोड़ा करके चुकाया जा सकता है। दुःखी किसान को बीमारी में भी यह बंक सहायता करता है। इस बंक में यही नहीं है कि बस रुपये दिये चले जाओ फिर उससे तुम्हें

कुछ लाभ नहीं। लाभ होने पर यह बैंक किसानों को उनका एक भाग देता भी है और कुछ गाँव के लिए किसी अच्छे काम में लगा दिया जाता है। शिक्षा का चन्दा, सफ़ाई या चौकीदारी का महसूल इन सब मदों का रुपया भी यहीं जमा रहता है। हर असामी अपना चन्दा यहीं आकर जमा कर देता है और यहीं से उसकी पक्की रसीद ले लेता है। शिक्षा के लिए जो रुपया सरकार देती है वह भी यहीं आकर जमा हो जाता है। यहीं से पाठशाला के अध्यापकों, सफ़ाई करने वालों और चौकीदारों का वेतन मिला करता है।

प्रश्नावली

१—साहूकार से रुपया उधार लेने पर ज़्यादातर क्या दुःख होते हैं ?

२—यदि तुमने किसी को इस प्रकार कर्ज़ लेकर तबाह होते देखा हो तो उसका हाल बताओ।

३—पंचायती बैंक से रुपया किन कामों के लिए मिल सकता है ?

४—पंचायती बैंक में जो रुपया बचता है वह किन कामों में ख़र्च किया जाता है ?

---

## ३१—सारस और सियार

एक सियार किसी सारस से बोला यों ही जा के,
"दावत है, खाना खा जाना तुम मेरे घर आ के॥"

अगले दिन सारस सियार के घर पहुँचा झट जाई।
थी सियार ने दूध-भात की पतली खीर बनाई॥
एक तश्तरी में सियार ने खीर परोसी आके;
लगा खिलाने, खुद खाने को वह भी बैठा जाके॥

कहने लगा सियार, "मित्र, अब खाओ खीर अघाके:
ऐसा माल कौन छोड़ेगा आगे अपने पाके!"
लम्बी चोंच बड़ी सारस की खीर न खा सकता था।
खीर भरी तश्तरी देखता हुआ सिर्फ तकता था॥

पर सियार तश्तरी साफ कर गया देखते छन में।
सारस बैठा रहा सोचता केवल अपने मन में॥
चालाकी सियार की फिर तो उस सारस ने जानी।
बस सियार की झटपट कर दी उसने भी मेहमानी॥

बोला सारस, "मित्र हमारे, कल मेरे घर आना,
दावत के बदले में दावत आ करके खा जाना।"
गया दूसरे दिन सियार सारस के घर पर, भाई।
उसने भी बस उसी तरह की पतली खीर बनाई॥

एक सुराही में उडेल कर उसे वहाँ पर लाया।
बोला, "मित्र खीर अब खाओ, कैसा इसे बनाया।"
लम्बी चोंच बड़ी सारस की लगा खीर वह खाने।
तकता रहा सियार अभागा आया था बे जाने॥

बोला सारस, "मित्र, हमारी कैसी खीर बनी है ?
कितनी मैं तारीफ़ करूँ यह मीठी खूब बनी है !"
कहने लगा सियार, "मित्र, हम कैसे हैं खा सकते ?
जाता नहीं सुराही में मुँह, बैठे इससे तकते ॥
चालाकी मैंने तुमसे की, उसका ही फल पाया ।
दावत के बदले में दावत देकर खूब छकाया ॥"

प्रश्नावली

१—सियार ने किस बर्तन में खीर परोस कर सारस को दी ?

२—इससे सारस को क्या असुविधा हुई ? क्यों और कैसे ?

३—इस दुष्टता का बदला सारस ने कैसे लिया ?

४—सियार सुराही में से खीर क्यों नहीं खा सका ?

५—खीर क्या वस्तु है ? क्या तुमने खीर खाई है ? उसका स्वाद कैसा होता है ? उसके बनाने में किन-किन चीज़ों की आवश्यकता पड़ती है ?

६—इन शब्दों के अर्थ बतलाओ—
चबाके, तश्तरी, मेहमानी, सुराही ।

७—तश्तरी और सुराही की तसवीर कागज़ पर बनाकर दिखलाओ ।

---

## ३२—आँखें और पढ़ना

हमारे लिए आँखों का होना बहुत आवश्यक है । जो लोग पढ़ने का काम करते हैं उनके लिए तो आँखें अमूल्य रत्न हैं । जिन लड़कों की आँखें

बचपन में ही खराब हो जाती हैं, वे अच्छी तरह पढ़-लिख नहीं सकते । इसलिए हमको अपनी आँखों की बहुत रक्षा करनी चाहिए । शीतला, बुखार और अन्य बीमारियों के बाद आँखें कमज़ोर हो जाती हैं । इसलिए रोग के बाद अधिक काम नहीं करना चाहिए और आँखों का विशेष ध्यान रखना चाहिए । तेज़ और चमकदार चीज़ (जैसे सूरज, धूप, लम्प) की ओर नहीं देखना चाहिए। एक ही चीज को बहुत देर तक टकटकी बाँध कर भी नहीं देखना चाहिए । लगातार बहुत देर तक काम न करना चाहिए । जब आँखें थकी-सी मालूम हों तब जरा आँखें उठा कर दूर की चीजों (जैसे आकाश, वृक्ष इत्यादि) को देखना लाभदायक होगा। पढ़ते समय किताब को आँख के बहुत पास नहीं रखना चाहिए; कम से कम १४ इंच की दूरी पर रखना चाहिए।

पढ़ते समय सीधा तन कर बैठना चाहिए। झुककर टेढ़ा बैठने से आँखों पर बहुत ज़ोर पड़ता है । लेटकर कभी न पढ़ना चाहिए । ऐसा करने से खून आँखों की तरफ बहुत चला जाता है । मेज पर हरे या नीले रङ्ग का कपड़ा या कागज

बिछा देना अच्छा होगा, क्योंकि हरा और नीला रङ्ग आँखों को लाभ पहुँचाता है ।

जहाँ पढ़ो वहाँ रोशनी काफी होनी चाहिए । कम रोशनी में पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं । शाम को अँधेरे में न पढ़ो । इस तरह पढ़ना चाहिए कि रोशनी आँखों पर न पड़े, बल्कि किताब के पन्ने पर पड़े । अगर मेज़ को दरवाज़े या खिड़की के पास रखो तो दरवाज़ा या खिड़की के सामने न बैठो, बल्कि इस तरह बैठो कि खिड़की तुम्हारे बायें हाथ की ओर रहे ।

लैंप को भी अपने सामने न रखो, बल्कि बायें हाथ की तरफ़ पीछे की ओर रखो । सामने बैठने से रोशनी तुम्हारी आँखों की ओर आयगी । बाईं ओर खिड़की रहने से रोशनी आँख पर न आयगी, किन्तु किताब पर पड़ेगी । दायें हाथ की ओर रोशनी रखने से लिखते समय उस हाथ की परछाईं किताब पर पड़ जाती है । इस कारण रोशनी बाईं ओर रहे, क्योंकि बायें हाथ से साधारणतया लिखा नहीं जाता । यदि धूप में पढ़ना हो तो धूप किताब पर न पड़ने पावे । ऐसे बैठो कि शरीर की छाया किताब पर पड़े और आँखें भी सूरज की ओर न रहें ।

## ३५—भक्त-शिरोमणि प्रह्लाद

प्रह्लाद हिरण्यकशिपु के पुत्र थे। हिरण्यकशिपु ईश्वर को नहीं मानता था। वह कहता था, "ईश्वर कोई चीज नहीं है। मैं ही सब कुछ हूँ। मेरी ही शक्ति से सब कुछ होता है।" परन्तु बालकपन से ही प्रह्लाद की ईश्वर पर बड़ी श्रद्धा थी।

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को पढ़ने बैठा दिया। वह गुरुजी से ईश्वर के विषय की बहुत-सी बातें पूछा करते। परन्तु वे हिरण्यकशिपु के भय से ऐसी बातें नहीं बताते थे। उन्होंने प्रह्लाद को ईश्वर की भक्ति न करने के लिए बहुत समझाया; परन्तु वे कब माननेवाले थे? उनकी संगति में पाठशाला के अन्य बालक भी ईश्वर के भक्त बन गये।

अन्त में गुरुजी ने तंग आकर हिरण्यकशिपु से प्रह्लाद की सब बातें कह सुनाईं। उन्हें सुनकर वह बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने प्रह्लाद को बहुतेरा समझाया, डराया, धमकाया; परन्तु इसका उन पर कुछ भी असर न हुआ। उसने तब क्रुद्ध होकर उन्हें कारागार में बन्द कर दिया; उन पर विषधर

भक्त-शिरोमणि प्रह्लाद

## ३५—भक्त-शिरोमणि प्रह्लाद

प्रह्लाद हिरण्यकशिपु के पुत्र थे । हिरण्यकशिपु ईश्वर को नहीं मानता था । वह कहता था, "ईश्वर कोई चीज नहीं है । मैं ही सब कुछ हूँ । मेरी ही शक्ति से सब कुछ होता है ।" परन्तु बालकपन से ही प्रह्लाद की ईश्वर पर बड़ी श्रद्धा थी ।

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को पढ़ने बैठा दिया । वे गुरुजी से ईश्वर के विषय की बहुत-सी बातें पूछा करते । परन्तु वे हिरण्यकशिपु के भय से ऐसी बातें नहीं बताते थे । उन्होंने प्रह्लाद को ईश्वर की भक्ति न करने के लिए बहुत समझाया ; परन्तु वे कब माननेवाले थे ! उनकी संगति से पाठशाला के अन्य बालक भी ईश्वर के भक्त बन गये ।

अन्त में गुरुजी ने जाकर हिरण्यकशिपु से प्रह्लाद की सब बात कह सुनाई । उन्हें सुनकर वह बहुत क्रुद्ध हुआ । उसने प्रह्लाद को बहुत समझाया बुझाया, धमकाया ; परन्तु इसका उन पर कुछ भी असर न हुआ । उसने तब क्रुद्ध होकर उन्हें कारागार में बन्द कर दिया; उन पर विष

साँप छुड़वाया; पर उनके पास जाते ही सर्प न जाने कहाँ अदृश्य हो गया।

हिरण्यकशिपु ने उन्हें पहाड़ की ऊँची चोटी पर से गिराने की आज्ञा दी। वे फिर भी बच गये। इससे उनका ईश्वर पर विश्वास और भी दृढ़ हो गया। हिरण्यकशिपु ने उनको और भी कई उपायों से मारना चाहा; परन्तु स्वयं भगवान् जिनके सहायक हों, उसे कौन मार सकता है? अन्त में लाचार होकर हिरण्यकशिपु ने उन्हें जलते हुए लोहे के खम्भे से बाँधने की आज्ञा दी। वे इससे भी तनिक न डरे। उन्होंने सोचा, जब भगवान् ही रक्षा करने वाले हैं, तब कौन मार सकता है?

हिरण्यकशिपु ने अन्तिम बार उनको समझाया, "बोल, अब तू क्या चाहता है? मरना या जीवित रहना? यदि तू मेरी आज्ञा मान लेगा, तो मैं तुझे राजगद्दी पर बिठाऊँगा।"

प्रह्लाद ने कहा, "पिता जी, मुझे राजगद्दी नहीं चाहिए। मैं मृत्यु के लिए तैयार हूँ।"

हिरण्यकशिपु को बड़ा क्रोध आया। वह ज्योंही प्रह्लाद को खम्भे में बाँधने लगा, त्योंही

अचानक खम्भ फट गया । उसमें से नृसिंह भगवान प्रकट हुए । उन्होंने अपने पैने नखों से उसका पेट चीर कर प्रह्लाद की रक्षा की ।

प्रश्नावली

१—प्रह्लाद की ऊपर लिखी हुई कथा अपनी भाषा में लिखो।

२—प्रह्लाद के पिता ने उसको अपने विचारों का बनाने के लिए कौन-कौन से उपाय किये ?

३—परमात्मा ने संकट के समय प्रह्लाद की कैसे रक्षा की ?

४—नृसिंह भगवान कौन थे ?

५ नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं के नाम बतलाओ —

हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत समझाया ।
उसमें से नृसिंह भगवान् प्रकट हुए ।

---

## ३६—बैरगिया नाला

[ कंठाग्र करने के लिए ]

[ मुसलमानी राज्यकाल में झूँसी ( इलाहाबाद ) के पास स्थित इस नाले में बहुत से ठग और डाकू रहा करते थे । ये यात्रियों को पकड़ कर लूट लिया करते थे । इनके लूटने के ढंग बहुत विचित्र थे । इसमें ये ढंग यहाँ बहुत रोचक रीति से बतलाया गया है ]

बैरगिया नाला जुलुम जोर ।
तहँ रहत साधु के भेस चोर ॥
बैरगिया से कुछ दूर जाय ।
इक बैठत ठग धूनी रमाय ॥

तेहि आगे कछु नारे की ओर।
मारग में बैठत एक चोर ॥
इक रहत दुष्ट नारे के पास।
कछु रहत किये नारे में वास ॥

सो साधु-रूप हरिनाम लेत।
निज साथिन को संकेत देत ॥
लखि जात पथिक नारे की राह।
पहिलो ठग बैठो डगर माँह—

निज ढिग बुलाय, पानी पिलाय,
हित बनि तेहिको सब भेद पाय,
जब जानत एहि के पास दाम,
सो "दामोदर" का लेत नाम ॥

ठग समुझि लेत आवत शिकार।
ठग दूसर लखि तन बल अकार ॥
"श्रीनारायण" सो कहत नीच।
लै जात ताहि नारे के बीच ॥

जब जानत सीधे ही उपाय,
नहिं देइ बटोही धन थमाय,
तब बोलत ठग एक "वामदेव"
यहि बाँस मार सब छीन लेव ॥

यहि भाँति रहा सो ठग-अवाम ।
नहि नारे से बचने की आस ॥

रहि राह बन्द, जग भयो सोर ।
"बैरगिया नाला जुलुम जोर ॥"

उत लखे पथिक दो एक साथ ।
तबला तम्बूरा लिए हाथ ॥

आवत झपटे नारे की ओर ॥
रहे दुबकि खड्ड में जाय चोर ।

जब उतरे नीचे कलावन्त ।
घेर्यो तिनको नीचन तुरन्त ॥

बोले, धरि देव जो होय माल,
नाहीं तो ह्वै है बुरा हाल ॥

सुनि पथिक दीन सीधे स्वभाव,
तन थरथर काँपत गिड़गिड़ाय,

बोले, "हम मांगन हैं तुम्हार ।
तबला तम्बूरा, धन हमार ॥

हम तुमसे मालिक कहें साँच
है काम हमारा गान नाच ।"

ठग बोले नाचो गाओ गान ।
हम खुशी होंय तब देहिं जान ॥

नट नाच गान तहँ होन लाग।
ठग भये मस्त सुनि मधुर राग॥
एक चतुर पथिक मन भयो सोच।
हम सौ जन, ठग हैं तीन पोच॥
अस सोचत मन उपजी गलानि।
सो लागो ठगवनि समय जानि॥
"बैरगिया नाला जुलुम जोर।
सौ पथिक नचावत तीन चोर॥
जब तबला बाजे धीन-धीन।
तब एक-एक पै तीन तीन॥" ॥
सुनि समुझि पथिकगन मरम बात।
लागे सरकावन मूक लात॥
दीन्हीं सबकी ठगई भुलाय।
सुख सोये अपने गाँव जाय॥

संकेत

दामोदर = विष्णु का एक नाम; इससे ठगों का इशारा था कि पास में दाम (रुपया पैसा) है। श्रीनारायण = विष्णु का नाम; नार (नाला) के अन्दर ले जाने का इशारा। वासुदेव = वासुदेव, विष्णु का नाम; बाँस (लट्ठ) देने (मारने) का इशारा। कलावन्त = बजाने (की कला) में चतुर, बजनिया। कथिक = कत्थक, गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति। मरम बात = छिपी हुई बात।

प्रश्नावली

१—अन्त के तीन छन्दों के अर्थ लिखो।

२—दामोदर, श्रीनारायण, वासदेव के असली अर्थ क्या हैं?

३—इनके कहने से ठगों का क्या मतलब था?

४—पथिकों ने चोरों को किस प्रकार मारने की युक्ति निकाली?

५—दिग, भेद, सहड़, कलावन्त और धीन-धीन का प्रयोग अपने बनाये हुए वाक्यों में करो।

---

## ३७—डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड

लड़को, तुम्हारे गाँव के पास से जो सड़कें जा[ती] हैं, उनकी हर साल मरम्मत होती है। अगर उन[की] मरम्मत बन्द हो जाय तो वे कुछ दिनों में बिगड़ जायँ[।] तुम जिस स्कूल में पढ़ने आते हो उसकी भी मरम्[मत] की आवश्यकता पड़ती है। क्या तुम जानते हो [कि] इन सड़कों, स्कूलों, दवाखानों आदि की मरम्मत कौ[न] करता है, इनका प्रबन्ध कौन करता है? इन सब[का] प्रबन्ध जिला-सभा (डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड) करती है।

हमारे देश में शहर बहुत ही कम हैं। अ[धिक] संख्या गाँवों की ही है। देश भर के सब मिला[कर] सौ में नब्बे से अधिक आदमी गाँवों में ही र[हते]

है। खेती करके ही वे अपना निर्वाह करते हैं। ऐसा कोई जिला नहीं है जिसमें सैकड़ों गाँव न हों। हर जिले में उसके तमाम गाँवों की ओर से एक जिला-सभा होती है। इस सभा का काम यह होता है कि वह अपने जिले के सम्पूर्ण गाँवों का प्रबन्ध करे। वह गाँवों के लोगों की सुविधा के लिए सड़कें बनवाती, स्कूल खोलती और दाम लिये बिना गरीब लोगों की दवा करने आदि का प्रबन्ध करती है।

जिला-सभा में किसानों और जमींदारों के द्वारा चुने हुए सभासद होते हैं। वही सब बातों का निश्चय करके आज्ञा देते हैं, और उन्हीं के अनुसार प्रबन्ध किया जाता है। इन सभासदों के चुनाव के लिये पूरा जिला कई हल्कों या विभागों में बाँट दिया जाता है। हर हल्का या विभाग में बहुत से गाँव होते हैं। उन गाँवों के रहनेवाले अपने-अपने हल्के से सभासद चुनकर भेजते हैं।

सब लोगों को जिला-सभाओं के लिए सभासद चुनने का अधिकार नहीं होता। कुछ खास हैसियत के लोग ही चुनाव में राय (वोट) दे सकते हैं। इस तरह सब हल्कों से निश्चित संख्या में ही कुछ

लोग जिला-सभा के सभासद् चुनकर भेजे जाते
वे स्वयं भी कुछ लोगों को अपने साथ काम करं
लिए चुन लेते हैं। इनके साथ ही जिला-सभ
में कुछ सभासद सरकार अपनी ओर से भी
भेजती है। ये सब सभासद मिल कर अपना
और उपसभापति चुन लेते हैं। इस तरह एक
चुने हुए सभासद तीन बरस तक काम करते हैं।
साल के बाद फिर से चुनाव होता है।
सभासदों के निकल जाने पर उनकी जगह
दूसरे लोग भी पहुँच जाते हैं। जिन्हें चुना
राय देने का अधिकार होता है, उनमें से कोई
जिला-सभा की सदस्यता के लिए खड़ा हो
है। सभी सभासद बिना किसी तरह के वेतन के
करते हैं।

साधारणतया इस सभा के काम ये हैं :—

नई सड़कें बनवाना और पुरानी सड़कों की म
करवाकर उन्हें ठीक रखना।

लड़कों के पढ़ने के लिए नये स्कूल खोलना
पुराने स्कूलों का प्रबन्ध करना।

जगह-जगह अस्पताल और औषधालय

कर लोगों के लिए बिना दाम लिए दवा देने का प्रबन्ध करना।

गाँवों में जो बाजार लगते हैं, उनका प्रबन्ध करना। नदियों पर पुल बनवाना तथा इसी तरह के और उपायों से जिलों के रहने वालों की सुविधा के लिए प्रबन्ध करना।

लड़को, यह सब जानकर तुम पूछ सकते हो कि इन सब कामों के लिए उस सभा के पास रुपया कहाँ से आता है, क्योंकि खेतों का लगान इत्यादि तो सीधा सरकारी खजाने में चला जाता है। अच्छा सुनो, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की आमदनी की मदें ये हैं :—

१—नदी, सड़क, बाजार और घाट वगैरह का महसूल।

२—खास-खास कामों के लिए मिलनेवाली सरकारी सहायता।

३—यह सभा लोगों पर आवश्यकता पड़ने पर कुछ कर भी लगा लेती है।

४—लगान के साथ किसानों से कुछ रक़म अधिक वसूल की जाती है। वह इसी सभा के नाम जमा होती है।

प्रश्नावली

१—ज़िला-सभा के सदस्य कितने साल तक एक बार चुने जाते रह सकते हैं ?

२—ज़िला-सभा की आमदनी के क्या साधन हैं ?

३—ज़िला-सभा किन मदों का प्रबन्ध किया करती है ?

४—क्या तुम किसी ऐसे आदमी को जानते [illegible] सदस्य हो ?

५—वह तुम्हारे गाँव में ज़िला-सभा की ओर से क्या किया जाता [illegible]

६—अपने ज़िला-सभा की बनवाई हुई पाँच सड़कों और [illegible] की इमारतों के नाम बतलाओ।

---

## ३८—म्याऊँ का ठौर

एक बार चूहों ने मिलकर,
की पंचायत बहुत उकताकर ॥
"बिल्ली, हमको बहुत [illegible]
ढूँढ़-ढूँढ़ सबको खा जाती ॥
यही हाल जो रहा अगर अब,
भाई, होंगे जल्द खतम सब ।
यदि बिल्ली को दवा न [illegible]
चूहों का तो हुआ सफाया" ॥
बोला तभी एक यों सूसा—
"पकड़ पूँछ देंगे हम घूँसा"

बोला एक दूसरा भाई—
"पकड़ूँ पैर मेरे मन आई"॥३॥

कहा एक ने पीठ जकड़ लूँ।"
बोला चौथा, "कान पकड़ लूँ"॥

बूढ़ा चूहा एक सयाना,
था बैठा बनकर अनजाना॥४॥

सभा-मध्य यों बोला जाकर,
"भाई, सुनना कान लगा कर,

मुझको बात एक बतलाओ,
डर है मुझको उसे हटाओ॥५॥

उसकी मूँछ कौन पकड़ेगा?
म्याउँ-ठौर से कौन लड़ेगा?"

बूढ़े की यह बात सुनी जब,
हुए दंग चूहे सारे तब॥६॥

तोड़ सभा का वह सन्नाटा,
बूढ़े ने सब को यों डाटा—

"तुम सब अपने घर को जाओ,
विजय न यों बिल्ली पर पाओ॥७॥

अभी तलक ज्यों छिपते आये,
उसी तरह तन रहो बचाये॥"

बचो, साहस कभी न तोड़ो।
काम अधूरा कभी न छोड़ो ॥८॥

नहीं-जैसे डर जाओगे ।
अंतकाल तक पछताओगे ॥९॥

प्रश्नावली—

१—'म्याऊँ के ठौर' से क्या आशय है ?
२—चूहों की बात तीन अपने शब्दों में लिखो ।
३—इस कविता से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?
४—बूढ़े चूहे की बात का अन्य चूहों पर क्या प्रभाव हुआ ?

---

## ३६—प्रयागराज

प्रयाग हिन्दुओं का प्रधान तीर्थ है । यहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती इन तीन पवित्र नदियों का संगम है । इसको त्रिवेणी कहते हैं । यहाँ पर प्रति वर्ष माघ में भारी मेला होता है । इसमें यहाँ बहुत दूर-दूर के यात्री आते हैं । यह शहर प्रायः आठ-नौ कोस के घेरे में बसा हुआ है । काशी और कानपुर की भाँति यह घना नहीं बसा है । यही संयुक्त प्रदेश की सरकार की राजधानी है । यहाँ पर अनेक स्थान देखने योग्य हैं । उन में से कुछेक का हाल तुम्हें सुनाता हूँ :—

मैंने एक बार इस सुन्दर नगर में तीन-चार दिन तक भ्रमण कर यहाँ की प्रायः सभी दर्शनीय वस्तुएँ देखीं। सर्व-प्रथम मैं त्रिवेणी स्नान करने गया। वास्तव में त्रिवेणी का तट बड़ा सुहावना और रमणीक है। संगम के पास ही अकबर का बनवाया हुआ किला है। संगम में स्नान करना लोग बड़े महत्व और पुण्य का काम समझते हैं।

इसके अनंतर मैं किले को देखने के लिए चला। क़िला बहुत सुन्दर और सुदृढ़ बना हुआ है। उसके भीतर बहुत सी मूर्तियाँ हैं। ये मूर्तियाँ एक गुफा के अन्दर हैं। लोगों का कथन है कि अक्षयवट वृक्ष भी यहाँ है। इसके विषय में कहा जाता है कि जब संसार प्रलय-काल में पानी से डूब जाता है तब भी यह बरगद का पेड़ बना रहता है। इसके अनंतर हम मूर्तियों का दर्शन करके अशोक-स्तम्भ को देखने के लिए गये। यह बहुत ऊँचा है। उस पर राजा अशोक ने अपने बौद्ध-धर्म की कुछ बातें लिखवाई थीं। इस स्तम्भ को कोई छूने नहीं पाता।

इसके बाद हम खुसरो बाग़ देखने गये।

कहते हैं कि यह बाग अकबर के पुत्र जहाँगीर के बड़े पुत्र खुसरो का बनवाया हुआ है। इस में अनेक तालाब तथा पानी खींचने की कलें हैं। यहीं से यमुना का जल लेकर शुद्ध और साफ करके यन्त्रों द्वारा शहर में जाता है। यह बाग पुराना है। यहाँ पर कई इमारतें हैं जिनमें खुसरो तथा उसकी माता की क़ब्रें हैं, वे विशेष उल्लेखनीय हैं।

फिर हम 'हाईकोर्ट' देखने गये। यह सूबे की सब से बड़ी न्याय की कचहरी है। इसकी इमारत भी बड़ी सुन्दर बनी हुई है। पश्चात हम चौक गये। यहाँ पर काफ़ी चहल पहल रहती है। प्रायः हर प्रकार की चीज़ यहाँ मिलती है। यहीं पर शहर की कोतवाली भी है, जिसमें शहर की पुलिस के सबसे बड़े अफ़सर बैठा करते हैं।

चौक से चलकर हम इक्के द्वारा 'कम्पनी बाग' पहुँचे। यह काफ़ी लम्बा-चौड़ा बाग है। इसका घेरा डेढ़-दो कोस के लगभग होगा। यहाँ पर महारानी विक्टोरिया की एक बड़ी सुन्दर मूर्ति है। यह बाग बहुत रमणीक है।

यहाँ के दृश्य देखते हुए हम और आगे बढ़े। इक्के वाले से पूछने पर मालूम हुआ कि आगे कटरा नामक मुहल्ला है। यहाँ भी काफी चहल-पहल रहती है। इसके बाद हमने 'म्योर कालेज' और प्रयाग विश्व-विद्यालय को देखा। प्रयाग-विश्वविद्यालय के भवन की भाँति शायद ही किसी विश्वविद्यालय के भवन हों। हम तो उसे देखकर चकित हो गये। इसके बाद शाम हुई। थके-माँदे हम अपने डेरे में विश्राम करने चले गये।

### प्रश्नावली

१—प्रयाग का नया नाम क्या है ?

२—इस शहर की कुछ प्रसिद्ध वस्तुओं के नाम बतलाओ।

३—अशोक-स्तम्भ कहाँ है ? इसमें क्या लिखा है ?

४—क्या तुमने कोई शहर देखा है ? उसमें देखने के योग्य कौनसी वस्तुएँ हैं ?

५—क्या तुम्हारे गाँव में भी कोई ऐसी वस्तु है जिसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं ? यदि हाँ तो वह क्या है ? उसका हाल संक्षेप में बतलाओ।

---

## ४१—सती सावित्री

सुता अश्वपति नृप की प्यारी,<br>
सावित्री थी अति सुकुमारी ।<br>
उस भूपति ने कर तप भारी,<br>
पाई थी यह एक कुमारी ॥१॥

वह विवाह के योग्य हुई जब,<br>
दी आज्ञा उसको नृप ने तब ।<br>
गुणी, प्रतापी और मनोहर,<br>
वरे स्वयं सावित्री ही वर ॥२॥

पूज्य पिता की आज्ञा पाकर,<br>
खोजा उसने निज समान वर ।<br>
सत्यवान कुल-शील-उजागर,<br>
सुन्दर, गुणी, तथा अति नागर ॥३॥

राज्यच्युत निज अन्ध-पिता-युत,<br>
सोच समय की गति अति अद्भुत<br>
गौतम मुनि के आश्रम वन में,<br>
रहता था वह चिंतित मन में ॥४॥

थे उसमें सारे गुण शोभित,<br>
जिन पर सावित्री हुई लोभित ।

था पर वह अल्पायु विशेष,
एक वर्ष था जीवन शेष ॥५॥
पर सावित्री का चित इसने,
हुआ न कुछ भी विचलित उसने।
तब विवाह उनका विधान से,
शीघ्र हो गया सत्यवान से ॥६॥
सेवा सास, ससुर, पति की नित
तब वह करने लगी यथोचित ॥
एक दिवस वन में दम्पति जब,
समिधि ले रहे थे सहसा तब ॥७॥
व्याकुल सिर पीड़ा से होकर,
सत्यवान गिर पड़े मही पर ॥
सावित्री दुख से घबराकर,
बैठी उनको ले गोदी पर ॥८॥
उसी समय अति भीम भयङ्कर,
आ पहुँचे यमराज वहीं पर ।
उसने देव ज्ञान से उनको,
किया प्रणाम जोड़ कर उनको ॥९॥

१—कारु ।

था पर वह अल्पायु विशेष,
एक वर्ष था जीवन शेष ॥५॥

पर सावित्री का चित इनसे,
हुआ न कुछ भी विचलित उनसे।
तब विवाह उनका विधान से,
शीघ्र हो गया सत्यवान से ॥६॥

सेवा सास, ससुर, पति की नित
तब वह करने लगी यथोचित ॥
एक दिवस वन में दम्पति जब,
समिधि ले रहे थे सहसा तब ॥७॥

व्याकुल शिर पीड़ा से होकर,
सत्यवान गिर पड़े मही पर ॥
सावित्री दुख से घबराकर,
बैठी उनको ले गोदी पर ॥८॥

उसी समय अति भीम भयङ्कर,
आ पहुँचे यमराज वहाँ पर।
उसने देव जान कर उनको,
किया प्रणाम जोड़ कर[1] उनको ॥९॥

[1]—हाथ।

## ४१—भारत की फ़सलें

यदि तुम हिन्दुस्थान की खेती के विषय में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम साल में कम से कम दो बार खेतों की सैर करने जाओ। वहाँ फसलों के बोने का उचित समय और ढंग तथा खेतों की तैयारी, तथा फसलों के सींचने और काटने का समय तथा उन्हें बाजार के लिए तैयार करने के ढंग आदि की जानकारी प्राप्त करो।

हमारे देश में मुख्य कर दो फसलें होती हैं। खरीफ और रबी। खरीफ को अगहनी और रबी को चैती भी कहते हैं। आओ इनके विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करें।

खरीफ़—आषाढ़ के महीने में भारत के प्रायः प्रत्येक भाग में गर्मी तथा वर्षा की अधिकता रहती है। उत्तरी भारत में गङ्गा और ब्रह्मपुत्र के बीच के प्रदेश तथा हिमालय की तराई के मैदान बहुत गर्म तथा नम रहते हैं। सिंध के मैदान में बहुत कम वर्षा होती है, परन्तु गर्मी वैसी ही पड़ती है। यहाँ पानी की कमी को नहरों द्वारा सिंचाई करके पूरा कर लिया जाता है। इस

के किनारे के मैदानों में वर्ष भर गर्मी की ऋतु रहती है। पश्चिमी समुद्र-तट के मैदानों में वर्ष भर कुछ न कुछ वर्षा होती ही रहती है, इसलिए यहाँ वर्ष में धान की तीन फसलें होती हैं। यहाँ तम्बाकू भी अधिकता से पैदा होती है।

पूर्वी समुद्र-तट के मैदान पर बाजरे की उत्तम फसलें होती हैं। दक्षिण प्रायद्वीप से पठार पर कपास की फसल उस भाग में बहुत ज़्यादा होती है, जहाँ काली मिट्टी की तहें हैं। यह मिट्टी वर्षा के जल को बहुत दिनों तक बनाये रखती है। इससे कपास के पौधे को समय समय पर काफी नमी मिलती रहती है।

आषाढ़ में बोई गई प्रायः सभी चीजें अगहन तक में पक जाती हैं। केवल अरहर, ईख आगे कई महीने तक खेतों ही में खड़ी रहती है। कपास और रेंड़ी की फसलें भी कातिक के अन्त तक एकत्रित की जाने लगती है। कातिक-अगहन का महीना हमारे देश में, विशेष कर सिंध और गङ्गा नदी के बीच के मैदान में, सरीफ की फसल के काटने का समय है।

रबी—उत्तरी हिन्दुस्तान में कातिक में गेहूँ, जौ, चना, सरसों, अलसी इत्यादि बोने की तैयारी आरम्भ हो जाती है। इनके साथ साथ आलू, मूँगफली, शकरकन्द, गाजर, शलजम और गोभी आदि भी बोई जाती हैं। इसे रबी या 'जाड़े की फसल' कहते हैं।

रबी की फसल के लिए खेती की तैयारी में किसानों को घोर परिश्रम करना पड़ता है। खेतों को कई बार जोतना और उनमें खाद डालना होता है। उनकी मिट्टी के अधिक भुरभुरी या कड़ी हो जाने तथा सर्दी पड़ने के पहले ही बोना पड़ता है।

इस फसल को कई बार सींचने की आवश्यकता पड़ती है। गङ्गा के मैदान के खेतों को कुओं, नालाबों और नहरों के जल से सींचते हैं। इस फसल के पौधे जाड़े की वृद्धि के साथ-साथ बढ़ते जाते हैं, परन्तु कड़ी सर्दी पड़ने पर यह फसल बहुधा सूख जाती है। यदि जाड़े के दिन में इस फसल के फूलने के समय कई दिन तक बादल रहते हैं या कुहरा पड़ता है तो इसे बहुत हानि पहुँचती है, क्योंकि प्रकाश के न मिलने से फूल मर जाते हैं और फसल खराब हो जाती है।

दुःख निवारण करने के लिए प्रभु के चक्र की स्तुति करने लगा। चक्र शान्त हो गया। दुर्वासा सङ्कट से छूट गये। राजा ने उनके चरणों पर पड़ कर उन्हें भोजन कराया।

प्रश्नावली

१—दुर्वासा ऋषि राजा पर क्यों अप्रसन्न हुए ?

२—भगवान ने दुर्वासा के क्रोध से राजा की किस प्रकार रक्षा की ?

३—क्या तुम बतला सकते हो कि विष्णु भगवान ने स्वयं दुर्वासा को क्यों नहीं क्षमा प्रदान की ?

४—इस क़िस्से से तुमको कौन-सी शिक्षा मिलती है ?

५—क्या इस प्रकार की कोई दूसरी कहानी भी तुम जानते हो ? उसे संक्षेप में लिखो।

---

## ४३—शिक्षा

[ पूरी कविता कण्ठाग्र करने के लिए ]

सच बोलो सब काल बात यह सुनो हमारी,
सच कहना है बाल, सर्वदा अति सुखकारी।
जो कोई नहिं झूठ खेल में भी कहता है,
जग में वही मनुष्य सदा सुख से रहता है ॥१॥
जितने प्राणी तुम्हें जगत में दिखलाते हैं,
सब ईश्वर के रचे, सभी सुख-दुख पाते हैं।

देखो, उनको कभी नहीं तुम दुख पहुँचाओ,
उन पर रक्खो दया कभी मत हाथ उठाओ ॥२॥

थोड़ा भी न घमंड कभी तुम मन में लाओ,
छोटा हो या बड़ा उसे मत शत्रु बनाओ।
देखो, यह जो धूल सदा लाने वाली है,
आँखों में पड़ यही कभी दुख पहुँचाती है ॥३॥

चाहे कुछ भी होय कभी मत करो लड़ाई,
सब से यों तुम रहो कि जैसे भाई-भाई।
पशु भी हिलमिल सदा साथ सुख से चरते हैं,
पशुओं से भी बुरे, निरन्तर जो लड़ते हैं ॥४॥

मरना भला, परन्तु किसी का कुछ न चुराना,
चौर्य कर्म है बुरा, इसे तुम भूल न जाना।
पाता है सम्मान न चोरी करनेवाला,
इस चोरी ने गेह नहीं है किसका घाला ॥५॥

मात-पिता गुरु आदि तुम्हें जो बात सिखावें,
हित-अनहित की बातें नित्य अनेक सुनावें।
उनका वह उपदेश बड़ा हितकारक सारा,
मानो बालक, सदा इसी में भला तुम्हारा ॥६॥

गप्प न मारो हे बालक, तुम बात-बात में,
मत सोओ दिन में, न जगो बहुत रात में।

रक्खो अपने वस्त्र स्वच्छ निर्मल अपना तन,
सब रोगों का मूल एक यह है मैलापन ॥७॥
तुमसे जो हैं बड़े करो उनका तुम आदर,
दुर्गुण सारे छोड़ और के लो गुण सुन्दर।
द्वेष करो ना कभी, किसी का जी न दुखाओ,
सबसे हिल मिल रहो सदा जिसमें सुख पाओ ॥८॥
सूर्य, चन्द्रमा, भूमि, पवन जिसने उपजाये,
जिसने यह सब अचर जीव हैं सभी बनाये।
उस प्रभु को तुम नित्य भक्ति से शीश झुकाओ।
सदा हृदय में ध्यान कभी मत उसे भुलाओ ॥९॥

संकेत

चर — वे जीव जो चल फिर सकते हैं, जैसे मनुष्य, पशु। अचर — वे जीव जो चल-फिर नहीं सकते, जैसे वृक्ष।

प्रश्नावली

१—इस कविता में क्या-क्या न करने को कहा गया है?

२—क्या करने का कारण इस पद्य में दिया गया है?

३—कठिन शब्दों का अर्थ लिखो।

४—नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाओ—
ऊँचे, अचर, भक्ति, सम्मान, हिलमिल और भुलाना।

## ४४—अमीरों का रोग

एक अमीर आदमी बड़ा सुस्त था। हर समय पलँग पर पड़ा रहता। यदि उसे कहीं जाना होता, तो वह बिना गाड़ी के कदम न उठाता। पैदल चलना मानो उसने सीखा ही न था।

पड़े-पड़े उसके पैर बेकार होगये, घुटने सूज गये, टाँगों में दर्द होने लगा, चलने फिरने की आदत छूट गई। शौचादि को भी बैसाखियों के सहारे जाता। उसे आराम कैसा ? जीना भी दूभर हो गया।

दूर दूर के हकीम और वैद्य बुलाये। बड़ी अच्छी-अच्छी दवाएँ तैयार कराईं। मगर किसी से भी कुछ लाभ न हुआ।

एक दिन एक बहुत दूर का वैद्य आकर उसी शहर में ठहरा। उसने भी इस बीमार का हाल सुना। उसने कुछ देर तक सोचा। फिर कहा, "मैं इस आदमी की दवा करूँगा।" तब वह उस अमीर के पास गया और बोला, "मैं आपकी बीमारी का हाल सुनकर आया हूँ। आप मेरी दवा करें, अवश्य ही लाभ होगा।"

अमीर ने कहा, "बताइये क्या दवा है ?"

वैद्य, "एक बात का वादा करें, तो दवा दो ?"

अमीर, "किस बात का वादा ?"

वैद्य, "जो इलाज मैं बताऊँ उससे इन्कार न करना ।"

अमीर ने कहा, "अच्छा ऐसा ही करूँगा ।"

वैद्य ने एक कमरा खाली कराया । उसमें से सब कुर्सियाँ और पलंग आदि निकाल दिये । फिर उसमें लोहे की चादरें बिछाईं । उन्हें खूब गर्म किया । तब वह अमीर को उस कमरे में ले गया । वैद्य ने उससे कहा, "जब तक मैं न आऊँ आप इसी कमरे में ठहरें ।" ऐसा कहकर वह बाहर निकल आया । फिर दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया ।

थोड़ी देर में अमीर के पैर जलने लगे । अब तो वह बहुत चिल्लाया, बैसाखियाँ टेकता हुआ दरवाजे की ओर गया । बहुत चीखा-चिल्लाया, पर वैद्य ने दरवाजा न खोला । अब तो पैर बहुत ही जलने लगे । पहले उसने एक पैर उठाया कि जरा आराम मिले, फिर दूसरा । बड़ा बेचैन हुआ । वह करता क्या ? अंत में बैसाखियाँ बगल में

से निकाल कर फेंक दी और बारी-बारी से दोनों पैर उठाने लगा। फिर तो यह हालत हुई कि सारे कमरे में नाचने लगा।

अब वैद्य ने दर्वाज़ा खोला। अमीर आदमी उछलता, कूदता, हाँफता हुआ बाहर निकला। न बैसाखियों की ज़रूरत रही, न किसी के सहारा देने की—टाँगों का दर्द और सूजन जाती रही।

वैद्य ने कहा, "कहिए जनाब! बैसाखियों को क्यों छोड़ आये? दर्द कैसा है?"

अमीर बोला, "महाराज, आपने अच्छी दवा दी। अच्छा इलाज किया, खूब नाच नचाया। थोड़ी देर और न खोलते, तो जान हवा हो जाती। हाँ, दर्द तो जाता रहा और अब मैं बिल्कुल अच्छा हूँ।"

वैद्य ने कहा, "फिर और क्या चाहते हो? मर्ज तो आपका जाता रहा। हाँ, तकलीफ आपको ज़रूर हुई। अब आप मेरी बात मानिए। दो घन्टे रोज़ सवेरे-शाम घूमा कीजिए। फिर आपको यह कष्ट न होगा।"

संकेत

बैसाखी=एक प्रकार की लकड़ी, जिसके सिरे पर गद्दी बंधी होती है। इसी पर बगल का सहारा देकर पंगु लोग चला करते हैं।

मास्टर साहब के इस प्रश्न का कोई भी विद्यार्थी उत्तर न दे सका। तब वे स्वयं पानी में उल्टा गिलास

डालकर कहने लगे, "देखो, गिलास में पानी तो आता है; परन्तु वह ऊपर नहीं उठने पाता। मानों उसे कोई नीचे की ओर दबाता है। अगर तुम रबड़ का एक नल या रेंड का पुछा गिलास की खाली जगह में लगा कर उसे मुँह से चूसो तो पानी ऊपर चढ़ आवेगा और गिलास भर जायगा।

"लड़को, क्या अब तुम बता सकते हो कि गिलास में पहले पानी क्यों नहीं चढ़ता था ? अब क्यों चढ़ आया ? क्या तुमने नल के द्वारा पानी को खींचा है ? गिलास का जो हिस्सा खाली था, उसमें हवा भरी थी। मुँह में नली लगाकर

के मुँह पर शीशा या अभ्रक लगा दो, और एक हाथ से उठा लो। फिर शीशे को हाथ से दबाने की आवश्यकता न पड़ेगी। न तो शीशा ही गिरेगा और न पानी ही। देखो, यह कैसी विचित्र बात है? नीचे का शीशा जैसे ही खिसकाओगे वैसे ही जल गिर जायगा। अब देखना यह है कि गिलास के नीचे यदि कोई छेद हो तो क्या होता है?

"यह तो तुम जानते ही हो कि छेद में गिलास का जल बह जाता है, परन्तु क्या कोई ऐसा भी उपाय जानते हो जिससे नीचे छेद रहने पर भी गिलास का जल न बहे? अच्छा मुझे मैं बताता हूँ। पहले एक अँगुली से छेद बन्द करके उसे पानी मे अच्छी तरह भर लो, त गिलास का खुला मुँह शीशा, अभ्रक या काग

"अगर नौका फूटी हो तो उसी तरह फौवारे के समान जल आया करता है। छेद बन्द करके

गिलास को टब के जल में औंधा करके डुबा रखने से मालूम होता है कि जल भरने में बाधा पड़ रही है। छेद खोलकर ज़रा सा ऊपर हाथ रख कर देखो तो जान पड़ेगा कि छेद से हवा निकल रही है और गिलास में आसानी से जल भर जा रहा है।"

"छेद का खुला रखकर गिलास डूबा रखने से
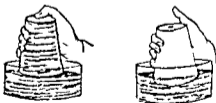
गिलास के नीचे टब का जल बराबर मात्रा में होने से गिलास जल से भरेगा। छेद को खुला

लोग कबाड़ी की हालत इस तरह अचानक बदलते देखकर अचम्भा करने लगे। वे आपस में कहने लगे कि कबाड़ी के पास न जाने कहाँ से इतना रुपया आता है। पर असली भेद कोई न जान पाया। उस गाँव का जमींदार बड़ा लोभी आदमी था; उसे कबाड़ी को बढ़ती देखकर बड़ी जलन होती थी। इससे उसने बहुत छिपकर सारे भेद को जान लिया।

अब तो वह कबाड़ी को उस बोतल के लिए बहुत तंग करने लगा। जब बहुत कहने-सुनने पर भी उसने बोतल देने से इन्कार किया, तब एक दिन मौका पाकर वह उसे चुरा ले गया।

दूसरे दिन कबाड़ी ने जब देखा कि बोतल गायब हो गई तब उसे बड़ा रंज हुआ। अपनी स्त्री के समझाने पर वह फिर एक गाय लेकर बजार में बेचने के लिए चल पड़ा। उसने सोचा कि शायद फिर उसका पुराना ग्राहक मिल जाय।

उसका विचार ठीक निकला। वह थोड़ी ही दूर गया था कि इतने में फिर वही बूढ़ा आदमी आ पहुँचा। कुछ इधर-उधर की बातें होने के

बाद सौदा पट गया और कबाड़ी ने एक बोतल के बदले में अपनी गाय उसके हवाले कर दी।

बोतल लेकर कबाड़ी खुशी-खुशी घर पहुँचा। बीबी को बुलाकर उसने बोतल दिखलाई और फिर उसे जमीन पर रखकर बोल उठा, "बोतल अपना काम करो।" उसका यह कहना था कि बोतल के भीतर से दो तगड़े आदमी सोंटे लिये हुए निकल पड़े और लगे मियाँ-बीबी की खबर लेने। बीबी ने रसोई-घर में भागकर दरवाजा बंद कर लिया। कबाड़ी भागता-भागता छत पर चढ़ गया। तब कहीं उसकी जान बची।

दोनों आदमियों को बोतल के अन्दर गया जानकर डरते-डरते कबाड़ी छत से उतरा। फिर बोतल हाथ में ले सीधे जमींदार के यहाँ पहुँचा। कबाड़ी ने झट से वहाँ पहुँच बोतल जमीन पर रख कर कहा, "बोतल अपना काम करो।" इतना कहना था कि वहाँ दो मुस्टंडे बोतल से निकल पड़े और लगे जमींदार महाशय की खबर लेने। बेचारे पर ऐसी बे-भाव की पड़ी कि जमीन पर लोटने लगा। पर तो भी सोंटे चलने बन्द न हुए। तब तो वह

कबाड़ी की दुहाई देने लगा, "भाई कबाड़ी रहम करो
मरा जाता हूँ। इन बदमाशों से मुझे बचाओ।"

तब कबाड़ी बोला, "अगर तुमको पिटना पसं
नहीं है तो हमारी बोतल हमको वापस दे दो।"

पहले तो उसने बहुत कुछ टाल-मटोल की, प
और कोई चारा न देखकर लाचार हो उसने वह चुरा
हुई बोतल कबाड़ी को दे दी। तब जाकर कहीं उसक
पिंड छूटा।

कबाड़ी दोनों बोतलें हाथ में लटकाए खुशी-खुश
अपने घर आया।

प्रश्नावली

१—कबाड़ी को बोतलें कैसे मिलीं?

२—पहली बोतल ने क्या करामात दिखाई?

३—उसको कबाड़ी ने ज़मींदार से कैसे पाया?

४—यदि तुम इसी तरह की कोई अन्य मनोरंजक कहानी जान
हो तो सुनाओ।

५—नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ बतलाओ और अपने वाक्यों
प्रयोग करो:—

ख़बर लेना, बेभाव की पड़ना।

६—पहले परिच्छेद के सब वाक्यों के उद्देश्य और विधेय बतलाओ

## २८—पच्चीस गिन्नियाँ

[ एक लोभी, किन्तु मूर्ख, साधु को किस प्रकार एक चालाक लड़के ने ठगा था—यह इस कविता में बतलाया गया है। बूढ़े-बुढ़िया प्रायः ऐसी दंतकथाएँ बच्चों को सुनाया करते हैं। ]

शाम हुई, रामा बुढ़िया के,
लड़के पोते खा पीकर।
अम्मा से बिन पूछे ही,
पहुँचे, रघू दादा के घर॥
"दादा! दादा! ओ दादा!!
सब कहने लगे एक स्वर से।
जल्दी कथा सुनाओ वह ही,
कहते थे जो शंकर से॥"
दादा बोले, "अच्छा, चुप हो,
बैठो कथा सुनाता हूँ।
साधू को धन नहीं चाहिए,
इसमें यही बताता हूँ॥
किसी गाँव के पास एक,
बहती नदी सुहानी थी।
उसके पास रामधुन की,
इक कुटिया बनी पुरानी थी॥

नाम 'रामधुन' मगर काम,
सब उनके थे हथकण्डे के।
रुपया की धुन थी उनको ही,
छल बल से या डण्डे से॥

दिखलाने को चिमटा तूँबा,
और पेट रखने खाली।
बड़ी जटा के जूड़े से पर,
धन की करते रखवाली॥
पैसे का रुपया कर डाला,
रुपये की गिन्नी कर ली।
फिर लम्बा-सा जूड़ा खोला,
गिन्नी झट उसमें धर ली॥
जोड़ी थीं पचीस गिन्नियाँ,
नहीं किसी को देते थे।
दिन भर में मौका पा उनको,
एक बार गिन लेते थे॥
एक रोज़ गिन्नी गिनकर थे,
बाँध, रहे बाबा जग।
इतने में ही मौका ताड़,
आ पहुँचा बनिया 'भृग'॥

गिन्नी लेने की इच्छा कर,
बड़ा भाव भक्ति के साथ ।
जाकर बाबा जी से बोला,
कर दण्डवत जोड़कर हाथ ॥

"महाराज कर कृपा दास पर,
कल सेवक के घर खाना ।"
बाबा बोले "अच्छा बच्चा,
भोजन जल्दी बनवाना ॥"

"अच्छा" कह कर मन में हँसते,
'भृग' अपने घर आया ।
आते ही फिर फाँग्न ही कुछ,
घरवाली को भी सिखलाया ॥

नहीं सवेरा होने पाया,
लाद कनस्टर घोड़े पर ।
'भृग' बाहर चला गया फिर,
लौटा दुपहर होने पर ॥

घर आकर चौके में देखा
बाबा जी हैं अड़े हुए ।
ध्यान जमाये भोजन पर
बस थाली में हैं गड़े हुए ॥

हुआ उदास अचानक भूरा
था बस बाकी रोने को ।
लगा देखने आँख फाड़कर
घर के कोने कोने को ॥
घरवाली ने पूछा, "क्या है ?"
बोला, "तुझे बताऊँ क्या ?
गायब हैं पचीस गिन्नियाँ,
हाय ! हाय ! मर जाऊँ क्या ?
व्यापारी घी वाला आया
दरवाजे पर बैठा है ।
रुपये सब ले जाऊँगा बस
इसी बात पर ऐंठा है ॥
रुपया सवा चार सौ उसका,
ये पचास हैं मेरे पास ।
कल की वे पचीस गिन्नियाँ
रख दी थीं बिस्तर के पास ॥"
घरवाली ने कहा झिड़ककर
"करो तुम्हें मारो मत जान ।
यहाँ सिवा चाचा जी के आया
ही और बताओ कौन ?"

अब तो बाबा जी घबड़ाये
बोले—"बच्चा कर विश्वास !
सिवा लँगोटी तवा के है
और नहीं कुछ मेरे पास ॥"

पास पड़ोसी जमा होगये,
"क्या है ? क्या है ?" कहते-कहते ।
भूरा ने जूड़ा धर खींचा
औ' बोला, "तेरे गहने ॥

कहाँ गिन्नियाँ गईं बता दे,
यहाँ न कोई जब आया ?"
जूड़ा के खुलते ही बाबा जी
ने अपना मुँह बाया ॥

पड़ोसियों ने धर कर डाटा,
हुये मारने को तैयार ।
भूरा बोला "उँह जाने दो,
अब ज्यादा न सताओ यार ॥"

चलते समय कहा भूरा ने,
"बाबा पुनः कृपा [illegible] ।"
बाबा बोले, "हाँ [illegible]

संकेत

सुहानी = सुहावन। भग्री का शुद्ध रूप भक्ति है। जौन = जो, लिखने में 'जौन' का प्रयोग नहीं होता। यहाँ कविता में हुआ है, सो ठीक नहीं।

प्रश्नावली

१—बनिये ने साधु की गिन्नियाँ ऐंठने की क्या तरकीब की?
२—उसकी स्त्री ने उसे इस काम में कैसे सहायता पहुँचाई?
३—बाबा जी ने अपनी गिन्नियाँ क्योंकर गँवाईं?
४—इस कविता से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?
५—इस कहानी को अपने शब्दों में लिखो।

---

## ४६—सुवर्णप्रिय राजा

( १ )

बहुत दिन हुए, एक राजा था। उसका नाम 'सुवर्णप्रिय' था। वह सोने का इतना लोभी था कि सभी वस्तुओं को सोने का ही बना देखना चाहता था, पराये धन से ही अपना कोष भरने में तत्पर रहता था। राजकोष में सोने का ढेर देख कर ही उसकी आँखें ठंडी होती थीं। किन्तु, इतने पर भी उसका लोभ दूर नहीं हुआ। धन की चिन्ता से वह बराबर व्याकुल रहता था। रात

दिन यही सोचा करता था कि उसके कोष में कैसे और सोना आ जाय ।

एक दिन वह अपने राजकोष में सोने का ढेर देख रहा था । उसकी चमक से उसकी आँखों में आनन्द की ज्योति झलकती थी । इतने में उस ढेर में उसे एक छाया देख पड़ी । छाया में एक छोटा-सा नाटा सुन्दर अनजान पुरुष खड़ा था । उसके हाथ सुनहले, पैर सुनहले, आँखें सुनहली थीं; सारा शरीर सुनहला था । चकित हो राजा ने पूछा—"तुम कौन हो ?"

उस अनजान पुरुष ने उत्तर में कहा—"मित्र सुवर्णप्रिय, तुम गौर से क्या सोच रहे हो ? क्या अपने सोच का सच्चा कारण मुझे बता सकते हो ?"

सुवर्णप्रिय ने आह भरकर कहा—"ऐ अनजान पुरुष, मेरी लालसा जानकर तुम क्या करोगे ? आह ! क्या अच्छा होता यदि संसार के सारे सोने का स्वामी मैं ही होता ! पर नहीं, यह हो नहीं सकता । ऐ सोने के शरीर वाले नौजवान, तुम कौन हो ? तुम्हारा शरीर सोने का कैसे हुआ ? क्या मेरा भी किसी प्रकार हो सकता है ?"

उस अनजान पुरुष ने कहा—"सुवर्णप्रिय, क्या तुम्हारी यह चिन्ता सोने के लिए थी? सोना! सोना कौन सी चीज़ है? मित्र, सोने की चाह बड़ी बुरी होती है। अधिक सोना पाने पर तुम आँखों से देख नहीं सकोगे, पैरों से चल नहीं सकोगे, हाथों से काम नहीं कर सकोगे, सुख की नींद सो नहीं सकोगे, बराबर चिन्ता में रहोगे, शान्ति नहीं पाओगे। सोना पाकर भी तुम्हें संतोष नहीं होगा।"

राजा उसकी बातों पर हँसता हुआ बोला—"ए, नासमझ नौजवान, सोने से बढ़कर संसार में क्या है? क्या वह भी आदमी है, जिसके पास सोना नहीं? सोना ही तो सच्चा धन है। बताओ सोना बिना संसार का कौन सा काम भली भाँति चल सकता है?"

यह सुनकर हँसते हुए घृणा की दृष्टि से देख उस पुरुष ने कहा—"मित्र सुवर्णप्रिय, यदि ऐसी बात है तो जाओ कल भोर से जिस वस्तु को तुम छूओगे, वह तुरंत सोने की हो जायगी। मैं 'सोने का देव हूँ'—मेरा नाम सुवर्णदेव है। मेरी बात खाली नहीं जा सकती।"

आनन्द !! देखा, कड़ी सोने की होकर चमकने लगी!

आनन्द में राजा ने अपना कपड़ा पहना। कपड़ा भी सोने का हो गया। कंघी उठाई, वह भी सोने की हो गई! इस प्रकार दर्पण, बर्तन, जूता, घड़ी, कुर्सी, दीवार आदि-जिस चीज पर उसका हाथ पड़ा सभी चमचमा उठीं! आनन्द से भरा वह बाग में गया। वहाँ सुन्दर फूल खिले थे। उनकी सुगन्ध से हृदय नाच उठता था। उनका सुन्दर दृश्य मन को मोहे लेता था। वह जल्दी-जल्दी उन्हें छूने लगा। पलक मारते सारा बाग सोने के वृक्षों और पौधों से भर गया!

( ३ )

राजा के आनन्द की कोई सीमा न रही। वह अपना काम तक भूल गया। इधर-उधर दौड़ कर वह सब चीजों को सोने का बना रहा था। उन्हें देखकर उसको अधिकाधिक आनन्द, अभिमान और आश्चर्य होता था। इतने में कुछ दिन निकल आया उसके भोर के जलपान का समय हो गया। आनन्द में पागल हो वह जलपान करने के लिए कमरे में गया। मेज पर प्याले में चाय और कुछ रोटियाँ

गुरुदेव ने कहा—"तुम्हारा यही विचार ठीक है। सम्पत्ति की भयङ्कर तृष्णा से मनुष्य को कभी शान्ति नहीं मिलती, वरन् शान्ति भंग हो जाती है। अब से तुम यही शिक्षा लो, और अपने लोभ का अन्त करो। शुद्ध हृदय से अपनी वाटिका के सोते में जाकर स्नान करो और उसी का जल सभी वस्तुओं पर—जिन्हें तुम पहले की तरह बनाना चाहते हो—छिड़को।"

इतना कहकर वह मूर्ति अदृश्य हो गई। राजा ने पास के एक घड़े को उठा लिया। पर वह भी सोने का हो गया। उसे लेकर वह बनाते हुए सोते में जा कूदा। बस उसके हृदय का बोझ हल्का हो गया। ऐसा सन्तोष और आनन्द उसे आज तक कभी नहीं हुआ था। उसने घड़े को भरकर सिर पर उठाया। महल में जाकर वह सभी वस्तुओं पर वही जल छिड़कने लगा।

अँगड़ाई लेती हुई, 'सोनाबेटी' उठ खड़ी हुई। कुछ भी उसकी समझ में नहीं आया कि बात क्या है। फिर वहाँ से वह बाग में पहुँचा और फूलों के पौधों पर जल छिड़कने लगा। सभी फूल पहले की तरह ज्यों के त्यों हो गये।

इस प्रकार राजा की सुवर्ण-शक्ति का शाप मिट गया ; किन्तु 'सोनाबेटी' के सिर के लम्बे-लम्बे काले केश सुनहले रह गये । जिनके कोमल केशों की सुनहली छटा से 'सोनाबेटी' की सुन्दरता बड़ी विचित्र हो गई। राजा के साथ फिर वह बड़े सुख से रहने लगी।

प्रश्नावली

१—इस कहानी के अनुसार राजा को किस वस्तु का लोभ था ?

२—उसे क्या वरदान मिला ? उससे उसे आनन्द हुआ या कष्ट ?

३—राजा को शांति किस वस्तु से मिली ?

४—अगर तुम इस राजा के पुत्र होते तो जिस समय उसने भोजन के लिये बुलाया होता, तुम उससे वस्तु के इस प्रेम पर क्या कहते ?

---

## ५०—अच्छा

[ कंठस्थ करने के लिए ]

सच्चरित्र विद्वान जनों की
संगति में रहना अच्छा ।
अपने मन की बात सदा ही
साफ़-साफ़ कहना अच्छा ॥
शोभा अधिक बढ़ाने वाला
है विद्या-गहना अच्छा ।

बुरा नहीं हो कभी किसी का
वही काम करना अच्छा ॥
सींग नख वाले पशुओं से
हरदम डरना अच्छा ।
जो है अपना वेश देश का
वही वेश धरना अच्छा ॥
उचित समय पर खाना, पढ़ना,
उचित समय पर सोना अच्छा ।
जिन विषयों का ज्ञान नहीं हो
वहाँ मौन होना अच्छा ॥
वश में करने को सब मीठी
बोली है होना अच्छा ।
जाना मना न होय जहाँ पर
उसी जगह जाना अच्छा ॥
विश्वम्भर या परमेश्वर का
नित्य गान गाना अच्छा
'भास्कर' दीन दुखी पर मन में
सदा दया लाना अच्छा ।

प्रश्नावली

१—इस कविता के अनुसार [illegible]
[illegible] है ?

सिद्दीजौहर अपनी बात का बड़ा धनी था। यह शिवाजी भली-भाँति जानते थे। वे बेधड़क उसके पास जा पहुँचे। उन्होंने उससे किला छोड़ देने की प्रतिज्ञा की। और बातें दूसरे दिन के लिए छोड़ कर वे वहाँ से शीघ्र ही किले में चले गये। लड़ाई रुक गई।

रात में शिवाजी सेना के साथ किले से बाहर निकले और चुपके-चुपके विशालगढ़ की ओर चल पड़े। यह समाचार पाकर सिद्दीजौहर ने शिवाजी को पकड़ने के लिए सेना भेजी।

शिवाजी विशालगढ़ पहुँचने वाले ही थे कि पीछे से बीजापुरी सेना आ धमकी। शिवाजी ने चाहा कि कोई वीर थोड़ी सेना के साथ शत्रुओं को रोके रहे और तब तक अन्य लोग विशालगढ़ पहुँच जायँ। इस काम के लिए बड़े योग्य वीर की आवश्यकता थी। शिवाजी की सेना में बाजीप्रभु नाम का एक वीर था, उसे शिवाजी ने इस काम के लिए नियुक्त किया।

बाजीप्रभु थोड़े मनुष्यों के साथ पत्थर की दीवार के समान वहाँ डट गया। पहले मगर

शिवाजी कह गये कि जब पाँच बार तोपों की आवाज सुनो, तब यहाँ ठहरने की जरूरत नहीं। तुम तब भी विशालगढ़ चले आना।

इतने में बाजीप्रभु की सेना पर बीजापुर की सेना टूट पड़ी। दोनों में गहरी मारकाट मच गई। बीजापुरी सेना को यथासाध्य रोकते-रोकते एक-एक करके मराठे वीर सदा के लिए धराशायी होने लगे। बाजीप्रभु ने अपने अटल पराक्रम से उस थोड़ी-सी सेना के बल पर उस प्रबल बीजापुरी सेना को तीन बार पीछे हटा दिया।

अचानक पाँच बार तोपों की आवाज से रण-भूमि गूँज उठी। मराठों ने जान लिया कि शिवाजी सकुशल विशालगढ़ पहुँच गये। बाजीप्रभु तब तक शस्त्रों से घायल होकर पत्थर पर पड़ा हुआ था. उसके शरीर से रक्त की धारा बह रही थी। उसकी मृत्यु निकट थी। उसने भी तोपों की आवाज सुन ली। अपने परिश्रम की सफलता पर उसका हृदय आनन्द से खिल उठा। उसने सन्तोष और प्रसन्नतापूर्वक अन्तिम श्वास ली।

शिवाजी बाजीप्रभु के गुणों को आजन्म नहीं भूले।

उन्होंने उसके उत्तराधिकारियों का बड़ा सम्मान किया और उन्हें एक बड़ी जागीर दी।

प्रश्नावली

१—शिवाजी कौन थे ?

२—बीजापुर के बादशाह से उनसे क्यों शत्रुता थी ?

३—बाजीप्रभु की स्वामि-भक्ति पर एक छोटा-सा लेख लिखो।

४—क्या तुम्हें किसी अन्य ऐसे आदमी का हाल विदित है, जिसने अपने स्वामी के लिए इसी प्रकार का त्याग किया हो ? यदि हाँ, तो उसे बतलाओ।

---

## ५२—मेरी मैया

[ पूरी कविता कण्ठाग्र करने के लिए ]

किसने अपने स्तन से मुझको
सु-मधुर दूध पिलाया था ?
लेकर गोद, प्रेम की थपकी
दे-दे मुझे सुलाया था ?
चूम-चूम कर किसने मेरे
गालों को गरमाया था ?
मेरी मैया ! मेरी मैया !!

बिलख-बिलख कर रोता था जब
नींद न मुझको आती थी,

जिसने प्यार किया अति मेरा,
    कैसे उसे भुलाऊँगा ?
नहीं स्वप्न में भी मैं उससे
    मन अपना बिलगाऊँगा ?
गुण उसके गाकर मैं उससे
    अविरल प्रीति लगाऊँगा ?
        मेरी मैया ! मेरी मैया !!

प्रश्नावली

१— ऊपर लिखी कविता में माता की किन बातों को प[illegible] याद कर रहा है ?

२—नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग अपने बनाये [illegible] करो ।—

सुमधुर, विलास, ताण्डव और पर्व

मृगराज भी कहलाता है । यह बड़े-बड़े बनैले साँड़ और भैंसों को केवल एक थपेड़ा मारकर गिरा देता है । फिर, जिस प्रकार बिल्ली चूहे को अनायास[1] ले जाती है, उसी प्रकार यह उन्हें पीठ पर लाद कर उछलता-कूदता अपनी राह लेता है ।

'सिंह' बिल्ली की जाति का जीव है । चित्र को गौर से देखो । मालूम होता है, एक खूब बड़ा और भयावना बिड़ाल खड़ा हो । बिड़ाल के ही समान उसके पंजों में नख छिपे होते हैं । बिड़ाल की जीभ के समान ही इसकी जीभ भी खुरदरी होती है । किन्तु इसके पंजे बहुत बड़े और नख बड़े ही चोखे और लम्बे होते हैं । जीभ इतनी खुरदरी होती है कि उसके द्वारा यह बड़े बड़े जन्तुओं की हड्डी से सटे माँस को बात की बात में छुड़ा लेता है । बिड़ाल के ही समान यह अधिक दूर तक सरपट नहीं दौड़ सकता । हाँ, कूद-कूद कर कुछ दूर तक तेजी से जा सकता है । यही कारण है कि सीधे दौड़कर यह हरिण को पकड़ नहीं सकता । किसी तेज दौड़नेवाले जन्तु के शिकार करने के लिए सिंह को छिपने ही

[1] —बिना परिश्रम के, आसानी से ।

कौशल[1] रचने पड़ते हैं।

पुरुष-सिंह की गरदन पर लम्बे-लम्बे बाल होते हैं। उन्हें केसर कहते हैं, इसी से सिंह का नाम 'केसरी' भी है। सिंहनी के केसर नहीं होते। सिंह की कमर बहुत पतली होती है और छाती खूब चौड़ी। इसीलिये उसका चेहरा रोबीला देख पड़ता है।

जब सिंह रात में शिकार को निकलता है, तब पृथ्वी की ओर मुँह करके बहुत जोर से गरजता है। ओह! वह गर्जन कितना भयंकर और कितना गंभीर होता है। पृथ्वी थरथर काँपने लगती है, सारा वन गूँज उठता है। वह गर्जन सुनकर ही सिंह के बल का यथार्थ अनुमान किया जा सकता है। किसी झरने के निकट जाकर वह अफर कर पानी पी लेता है, और वहीं किसी कुञ्ज में छिप कर बैठ जाता है। जहाँ हरिण आदि जन्तु वहाँ से पानी पीने को निकले कि सिंह के शिकार बने।

सिंह के शिकार करने के और भी कई तरीके हैं। पढ़ ही चुके हो कि सरपट भागने में सिंह हरिण

[1] —चतुराई।

सबसे बलवान था, वह कूदा और उस
आदमी के निकट खड़ा होकर दूसरे सिंहों
लगा। वह सिंह सर्कस के उस आदमी
प्यारा था, इसलिए वह दूसरे सिंहों का व
पर सहकर उसकी रक्षा करने लगा।
एक आदमी कटघरे में घुस गया, और उस
को बाहर खींच लाया। उस आदमी की रक्षा
उसके प्यारे सिंह को बहुत बुरी तरह घाव
पड़ा था इसीसे कहते हैं, कि 'हित अनां
पंछिउ जाना।'

*सिंह की हितैषिता की एक कहानी औ*
एक चिड़ियाखाने में एक बूढ़ी सिंह
वह अपनी देह को जोर से हिला-डुला
सकती थी। इसलिये कुछ चूहे उसके
घुसकर उसे बहुत तंग करते थे। जब म
उसकी दुर्दशा देखी तब उन चूहों के
लिये एक कुत्ते को उस पिंजड़े के एक कोन
कर दिया। कुत्ते को घुसते देखते ही सि
हो गई और उसको मारने पर तुल गई
कुत्ता डरा नहीं। उसने पिंजड़े के एक

बैठे हुए एक बड़े साँप को झपटकर मार डाला। अब सिंहनी समझ गई कि यह शत्रु नहीं, मित्र है। बस वह कुत्ते की मित्र बन गई। उस दिन से सोने के समय सिंहनी कुत्ते को प्रेम से अपने पास बुलाती, और दोनों पंजों के बीच में बिठाकर उसे प्रेम से सुलाती। कुत्ता भी सिंहनी की गोद में अपना सिर रख कर आनन्द से सोता और उसके शत्रु न्हों को पास नहीं फटकने देता।

### प्रश्नावली

१—सिंह की सूरत शकल किस जानवर से मिलती-जुलती है?

२—सर्कस में जो सिंह है वह कुत्ता जाति का है या बिल्ली जाति का—यह तुम किस प्रकार पहचान सकते हो?

३—सिंह पशु पालने वालों को बहुत परेशान करता है—क्या तुम इस बात का प्रमाण दे सकते हो?

४—यदि तुम्हारे सामने अचानक सिंह आ जाय तो उससे बचने के लिए क्या करोगे?

---

## ५४—नाव

चला करती पानी पर रेल।
सड़क पर मोटर करती खेल॥

हवा में वायुयान का ढंग ।
देखकर होते हैं हम दंग ॥

इन्हें हम समझ न पाते हैं ।
न जाने, क्यों चकराते हैं ।

अहा ! पानी पर चलती नाव !
देख लो, दिखलाती है चाव ॥
हृदय में भरती है आनन्द ।
हमें तो है यह अधिक पसन्द ॥

हमें यह सुख पहुँचाती है ।
हमारा जी बहलाती है ॥

गगन में घिरते जब घन घोर ।
बरसता है पानी अति जोर ॥

...—नद हो जाते जल पूर ।
...ता पानी अति ही दूर ।

नगर हम जिधर चलाते हैं ।
उधर हम पानी पाते हैं ॥

...लते नव बरसात-बहार ।
...ल पर ही हम लोग सवार ॥
...ाँ तक लोग न सकते तैर ।
...ाँ तक करते हैं हम सैर ॥

घूमने का सुख पाते हैं ।
गीत सबों के गाते हैं ॥

...ने से लेते तनिक न काम ।
...हीं मोटर का लेते नाम ॥
...हते नहीं हवाई-यान ।
...ल पर ही बन तम्बू तान—

घूमने को हम जाते हैं ।
घूमकर वापस आते हैं ॥

...साइकिल, मोटरकार ।
...सब रहते हैं बेकार ॥
...थी-घोड़े देते काम ।
... नाव कमाती नाम ॥

अनोखा काम दिखाती है ।
बड़प्पन भारी पाती है ॥
नाव पर होकर लोग सवार ।
बड़ी नदियों के होते पार ॥
मानों रख अपने ऊपर भार ।
नाव देती उस पार उतार ॥
खेल का खेल खिलाती है ॥
काम का काम बनाती है ॥
देखिए सखे, समय का फेर ।
नाव पर होता जो अंधेर ॥
नाव जिस गाड़ी पर थी रही ।
नाव पर गाड़ी है अब वही ॥
समय जब पलटा खाता है—
काम उलटा हो जाता है ॥

### प्रश्नावली

१—नीचे लिखे मुहावरों का आशय वाक्यों में प्रयोग करके स्पष्ट करो :—

नाम कमाना, समय पलटा खाता है, काम उलटा होना, देखने ही बनना ।

२—रेल किस चीज़ पर चला करती है ?

३—जल, थल और आकाश में चलने वाली कुछ सवारियों के नाम बतलाओ ।

एक अधिक खाने से होती है । संसार में सब से अधिक रोगी पाचन संबंधी रोगों के होते हैं और उनमें से अधिकतर ऐसे होते हैं जो अधिक खाने से बीमार पड़ते हैं ।

अधिक भोजन करने के पश्चात् बड़ी बेचैनी मालूम होने लगती है, पेट फूल जाता है, साँस लेने में कष्ट होता है, शरीर भारी मालूम होने लगता है । और चलना फिरना तक बुरा मालूम होता है । जो लोग सदा अधिक भोजन किया करते हैं उनका आमाशय ( मेदा ) अधिक काम करते-करते दुर्बल पड़ जाता है और फिर उसमें साधारण भोजन पचाने की भी शक्ति नहीं रह जाती । इससे मन्दाग्नि या कब्ज इत्यादि रहने लगता है । खाना अधिक खाने और शारीरिक परिश्रम संबंधी काम कम करने वालों को एक विशेष रोग हो जाता है जिसको मधुमेह कहते हैं । इस रोग से मूत्र में शक्कर आने लगती है । शक्कर के निकल जाने से शरीर कमजोर हो जाता है और दूसरे रोग उत्पन्न हो जाते हैं ।

बचपन और लड़कपन में दूध पीने की बहुत आवश्यकता होती है । यदि बच्चों को काफी दूध

लौटेंगे ? इसका विचार भविष्यत् के लिए ही छोड़ दिया । गाड़ी आई । बैठ गए ।

दिन के दस बजे गाड़ी मुगलसराय पहुँची । चुनार के लिए दूसरी गाड़ी से जाना पड़ता है । इसलिए हम मुगलसराय में उतर पड़े । पास में कुछ सामान तो था ही नहीं । खाली हाथ प्लेटफार्म[1] पर घूमने लगे ।

भोजन का समय भी हो रहा था । पास में केवल बारह आने बचे थे । इतना अच्छा हुआ था कि साथ में बनारस से थोड़े फल लेते आये थे । बस उन्हीं पर हाथ साफ किया । पैसे खर्चने की गुञ्जाइश नहीं थी । अतः पेट में जो गुञ्जाइश मालूम होती थी वह जल पीकर पूरी कर ली गई ।

इतने ही में चुनार जाने के लिए गाड़ी आ गई । चटपट उस पर चढ़ गए ।

ठीक बारह बजकर पाँच मिनट पर गाड़ी चुनार स्टेशन पहुँची । आठ आने में इक्का किया ।

१—स्टेशन पर ऊँचा बना हुआ चौरस और लम्बा चबूतरा जिसस सटकर रेलगाड़ी खड़ी हुआ करती है ।

हमने सुनार के कभी दर्शन न किये थे। किला देखने के इरादे से आये थे। इक्केवाले से विदित हुआ कि किला देखने के लिए तहसील-दार साहब से आज्ञा लेनी पड़ती है। अतः वह हमें तहसीलदार साहब के बंगले पर ले गया। बंगले पर पहुँचते ही चपरासी ने हमें टोका। हमने उसे तहसीलदार से मिला देने के लिए कहा।

चपरासी और इक्केवाले में कुछ कानाफूंसी और इशारेबाजी भी हुई। जिसका मतलब हमने यह निकाला कि उनका विचार हमसे कुछ ऐंठने का है। किन्तु हम उन्हें टका भी देने वाले न थे।

खैर, उसने हमें दफ्तर में बैठा दिया और वह तहसीलदार साहब के आने की राह देखने लगा। तहसीलदार पास ही के कमरे में बैठे थे। हम स्वतः उनसे मिले। उन्होंने आज्ञापत्र दे दिया। जब हम इक्के पर बैठने के लिए जाने लगे तब चपरासी भी साथ साथ आया। बोला, "काहे बाबू जी! इनाम-विनाम ना मिली?" हमने कहा 'लौट कर' और इक्के पर बैठ गये। इक्का आगे बढ़ा। बेचारा चपरासी सतृष्ण नेत्रों से हमारी ओर देखता हुआ दरवाजे पर ही खड़ा रह गया।

हम शहर में से होते हुए सीधे किले के दरवाजे पर पहुँचे। टिकट दिखाने पर फाटक खुला। खूब जी भर कर देखा। इतिहास में पढ़ा था कि किला बहुत मजबूत और सुरक्षित है। वास्तव में वह निकला भी ऐसा ही। जाते ही वह महल दिखाई दिया जिसमें कम अवस्था के कैदी रखे जाते हैं। इनमें कई तो ऐसे थे जो निरे बालक थे। इन बालकों की ऐसी दशा पर अचम्भा और दुःख भी होता था। पर बालकों के भोले हृदय में इतनी शरारत कहाँ से घुस गई ? कई बालक ऐसे थे जो अनाथ थे। अपने पापी पेट को पालने के लिए बेचारों को चोरी का आश्रय लेना पड़ा था। सच है, दरिद्रता अपराधों की जननी है। इस स्कूल में बालक-कैदियों को हाथ की कारीगरी के साथ लिखना-पढ़ना भी सिखाया जाता है। जो बालक कार्य्य में असावधानी करता है उसे दंड भी दिया जाता है।

किले के ऊपर से नीचे नजर दौड़ाने पर बहुत ही भला लगता है। किले के चारों ओर गंगाजी की पवित्र धाराएँ झाड़-झंखाड़ों में से बहती हुई मन को लुभाने लगती हैं।

जी तो होता था कि यहीं बैठकर इन छवि को खूब देखा करें। पर गाड़ी का समय निकट हो रहा था। इसलिए जल्दी ही उठ पड़े और स्टेशन पर ठीक समय पर पहुँच गये। पहुँचते ही गाड़ी आगई। रात में अपने घर पहुँच गये।

प्रश्नावली

१—कुतुब कहाँ है?

२—वहाँ कौन सी चीज़ें देखने लायक है?

३—स्टेशन में टिकट लेने का क्या तुम्हें कभी मौका लगा है? तुमने कितने में टिकट खरीदा था? कहाँ के लिए? तुम्हारे टिकट को किसी ने रेल में जाँच की थी या नहीं?

४—क्या तुमने कभी किसी स्थान की सैर की है? यदि हाँ, तो संक्षेप में उसका वर्णन करो।

---

## ५८—वृन्द के दोहे

बिन स्वारथ कैसे सहै, कोऊ करुए बैन?
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन[1] ॥१॥
पर को औगुन देखिये, अपनो दृष्टि न मोर।
करै उजेरो दीप, पै तरे अँधेरो होय ॥२॥
ताही को करिये जतन, गहिये जाकी आर।
कौन बैठि के डार पर, काटै सोई डार? ॥३॥

---

१—धेनु, गाय।

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार।
जैसे हाँडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार ॥४॥
समझी सों सब मिलत है, बिन सम मिलै न काहि।
सीधी अँगुरी घी जम्यो, क्यों हू निकसत नाहिं ॥५॥
भले-बुरे सब एक से, जौलों बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक-पिक[1], ऋतु बसंत के माहिं ॥६॥
अरि छोटो गनिये नहीं, जासों होत बिगार।
तृन-समूह को छिनक में, जारत तनक अँगार ॥७॥
आदि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ।
ज्यों पलास सँग पान के, पहुँचे राजा हाथ ॥८॥
कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग।
पाथर डारे कीच में, उछरि बिगारै अंग ॥९॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले करि निरधार[2]।
पानी पी घर पूछनो, नाहिन भलो बिचार ॥१०॥
मधुर बचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान।
तनक सीत जल सों मिटै, जैसे दूध उफान ॥११॥

शब्दावली

[illegible]

१—कोयल और कौवा  २—निश्चय

३—काठ की हाँडी दूसरी बार नहीं चढ़ती। कैसे?
४—पाँचवें, सातवें और आठवें दोहों का अर्थ लिखो।
५—इन शब्दों के शुद्ध संस्कृत रूप बतलाओ :—
बैन, स्वारथ, मीत और सम।

---

## ५६—सिंचाई के कुछ ढंग

पौदे के लिए उसकी जड़ें जमीन से खूराक खींचती हैं। जो खूराक जड़ें खींचती हैं, वह जमीन के अन्दर पानी के साथ घुली रहती है। अगर पानी न हो तो पौदों को भोजन ही न मिले। इसी से पानी खेती के लिए बहुत आवश्यक है।

पानी खेतों को तीन तरह से मिलता है—आकाश से, पृथ्वी पर से और पृथ्वी की सतह के नीचे से। आकाश से जो पानी मिलता है वह वर्षा, कुहरा, ओस आदि के रूप में आता है। नदी, नहर और तालाब आदि से जो पानी मिलता है, वह पृथ्वी पर से आता है, और कुओं से या जमीन की नमी से जो पानी मिलता है वह पृथ्वी के नीचे से आता है।

आकाश से बहुधा इतना पानी नहीं मिलता

कि उससे खेतों का, पूरी तरह से, काम चल सके इसलिए किसान को तालाब, नहर, नदी और कुओं से पानी लेने की आवश्यकता पड़ती है सिंचाई के लिए कब कितना पानी खेत में पहुँचाना चाहिए—यह किसान लोग अच्छी तरह जानते हैं। जमीन और बीज के अनुसार ही पानी का परिमाण कम या अधिक हो जाता है इसलिए सभी खेतिहरों को सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है और वे किसी न किसी उपाय से खेत में पानी अवश्य पहुँचाते हैं।

हमारे देश में आदमी या तो स्वयं ही पानी निकालते हैं या बैलों के द्वारा। स्वयं पानी निकालने में वे दो-तीन उपायों से काम लेते हैं जैसे बड़ी ढेकली और नालियाँ काटकर। जब पानी साधारण ऊँचाई पर ले जाना होता है तब वहाँ से काम लिया जाता है। बेड़ियाँ बाँस की बिनी हुई होती हैं। उनमें इधर उधर रस्सी बाँध कर फिर उससे पानी उलीचते हैं। इस प्रकार परिश्रम तो पड़ता है, पर पानी निकलने की सुविधा हो तो इस रीति से सिंचाई अच्छी होती है। इसके लिए मजबूत आदमियों की जरूरत और

सकना पड़ती है । कमजोर आदमी बेड़ी में अच्छी तरह
चैन नहीं दे सकते ।

बेड़ी

ढेंकली का रिवाज अधिकतर नदियों के किनारे, कुछ ऊँचे किनारों वाले तालाबों पर या उन स्थानों में होता है, जहाँ कुओं में बहुत ही थोड़ी गहराई पर पानी मिल जाता है । इससे

पानी बहुत थोड़े परिमाण में निकलता है। इस

दे सकते । पातालफोड़ी कुओं में पानी की कमी नहीं रहती । ये इतनी गहराई तक खोदे जाते हैं कि पानी के सोते फूट पड़ते हैं । इनमें जितना ज़रूरत हो, उतना पानी निकाला जा सकता है । जब इस रीति से नालियों द्वारा पानी खेतों में पहुँचाया जाता है । तब एक ही कुएँ से जो काम निकलता है वह दस बीस साधारण कुओं से भी नहीं निकल सकता है । एक बार इसमें कुछ रुपये व्यय कर देने से फिर खेतों की उपज बहुत बढ़ जाती है ।

प्रश्नावली

१—खेतों को पानी कहाँ से मिलता है ?

२—रहट, पुर, बेड़ी और ढेंकली की बनावट बताओ । यह समझाओ कि इनमें से हरेक से किस प्रकार पानी खेत में पहुँचाया जाता है ?

३—किसान को तालाब, नहर और नदी से पानी लेने की क्यों आवश्यकता पड़ती है ?

४—पातालफोड़ी कुएँ से क्या मतलब समझते हो ?

५—इस पाठ के अन्तिम वाक्य को [illegible] की व्याख्या करो ।

---

तक पहुँच पाया हूँ। भगवान द्रोणाचार्य तो अपनी कुटी में अवश्य होंगे। चलूँ, देखूँ। नम्रतापूर्वक पद-वन्दना करके उनसे प्रार्थना करूँगा—भगवन्, मुझे धनुर्विद्या सिखाइये (कुछ सोचकर) परन्तु वह तो ठहरे राजगुरु[1] (आगे बढ़ता है) मुझे कैसे सिखायेंगे!

(मूनी व्यायामशाला में द्रोणाचार्य ध्यान में मग्न बैठे हैं)

एक०—(आगे बढ़कर) भगवन्, मैं 'एकलव्य' आपको प्रणाम करता हूँ (चरणों पर गिरता है)।

द्रोणाचार्य—(आँखें खोलकर) तू कौन है? राजकुमारों की इस व्यायामशाला में किसलिए आया है?

एक०—महाराज, मैं हिरण्यधनु नामक राज-भील का पुत्र हूँ। आपके दर्शन के लिए आया हूँ।

द्रोणा०—परन्तु मुझसे तुझे क्या प्रयोजन है?

एक०—भगवन्, मैं धनुर्विद्या सीखना चाहता हूँ। किसी गुरु की खोज में था। इतने में आपका शुभ नाम सुना। बहुत से राजकुमार आप

---

१—राजाओं के गुरु।

तक पहुँच पाया हूँ। भगवान द्रोणाचार्य तो अपनी कुटी में अवश्य होंगे। चलूँ, देखूँ। नम्रतापूर्वक पद-वन्दना करके उनसे प्रार्थना करूँगा—भगवन्, मुझे धनुर्विद्या सिखाइये (कुछ सोचकर) परन्तु वह तो ठहरे राजगुरु[1] (आगे बढ़ता है) मुझे कैसे सिखायेंगे!

*( सूनी व्यायामशाला में द्रोणाचार्य ध्यान में मग्न बैठे हैं )*

एक०—(आगे बढ़कर) भगवन, मैं 'एकलव्य' आपको प्रणाम करता हूँ (चरणों पर गिरता है)।

द्रोणाचार्य—(आँखें खोलकर) तू कौन है? राजकुमारों की इस व्यायामशाला में किसलिए आया है?

एक०—महाराज, मैं हिरण्यधनु नामक राज-भील का पुत्र हूँ। आपके दर्शन के लिए आया हूँ।

द्रोणा०—परन्तु मुझसे तुझे क्या प्रयोजन है?

एक०—भगवन्, मैं धनुर्विद्या सीखना चाहता हूँ। किसी गुरु की खोज में था। इतने में आपका शुभ नाम सुना। बहुत से राजकुमार आप

---

1—राजाओं के गुरु।

मे धनुर्विद्या सीखते हैं । मैं भी इसी आशा से आया हूँ।

द्रोणा०—तू धनुर्विद्या सीखकर क्या करेगा ? राजाओं की तरह दिग्विजय[1] तो तुझे करना ही नहीं है ? बहुत हुआ तो दो-चार पक्षी मार लिया करेगा।

एक०—( सहसा सहम कर ) नहीं गुरुदेव ! अस्त्र-विद्या तो अपने को दूसरों से बचाने के लिए है, दूसरे को मारने के लिए नहीं।

द्रोणा०—तू भील है, अतः तुझे बाण चलाना आता ही होगा।

एक०—हाँ महाराज; परन्तु मेरी इच्छा इस विद्या में पारंगत[2] होने की है; धनुर्धर बनने की है।

द्रोणा०—( मन ही मन ) यह भील-पुत्र चतुर जान पड़ता है ! इसकी उत्कंठा और श्रद्धा तो राजकुमारों से भी बढ़कर जान पड़ती है । किन्तु इसे शिक्षा देने से मेरी सारी आशायें मिट्टी में मिल जायँगी। मैं तो प्रिय पुत्र 'अश्वत्थामा' को ही

[1]—( चारों ) दिशाओं को, अर्थात् सब ओर के राजाओं को जीतना.
[2]—पूरा जानकार ।

( क्रमशः सात बाण छोड़कर कुत्ते का मुँह इस तरह भर देता है कि उसका भौंकना बन्द हो जाता है और कुत्ता मुँह में बाणों को भरे हुए आता है )

तीसरा दृश्य

[ स्थान वन-प्रदेश ]

( वन में सब पाण्डव और कौरव राजकुमार शिकार खेलने के लिए इधर-उधर चले जाते हैं । भीम और अर्जुन बातें करते हुए आते हैं । )

अर्जुन—भैया, गुरुदेव ने कहा है कि सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर वह है जो सफाई से बाणों द्वारा फूल चुन ले । क्योंकि जिस प्रकार जोरदार और चोट करने वाला निशाना लगाना धनुर्धर का मुख्य लक्षण है, उसी प्रकार लाघव का होना भी जरूरी है ।

भीम—गदाधारी के लिए यह बात नहीं है । जो जितना अधिक पतला चूरा कर दे, वही गदा चलाने में चतुर है । ( एक पत्थर को चूर-चूर कर दिखाता है ।

अर्जुन—परन्तु बाण चलाने में हस्त-लाघव के सिवा विवेक भी होना चाहिए और साथ ही चपलता भी, किन्तु घबराहट नहीं । पूरी सँभाल

प्रश्नावली

१—एकलव्य किसलिये द्रोणाचार्य के पास गया था?

२—क्या उसकी इच्छा द्रोणाचार्य ने पूरी की?

३—उसने द्रोणाचार्य को गुरु कैसे बनाया?

४—एकलव्य के बाण चलाने के कौशल का कोई उदाहरण दो।

५—नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बतलाओ और इनका प्रयोग वाक्यों में भी करो:—

धनुर्धर, प्रवीण, मृग-चर्म, हस्त-लाघव, धनुर्वेद।

---

## ६२—मेरी मातृ-भूमि

[ कंठाग्र करने के लिये ]

पावन परम जहाँ की, मंजुल महात्म-धारा,
पहले-पहल ही देखा, जिसने प्रभात प्यारा,
सुरलोक से भी अनुपम, ऋषियों ने जिसको गाया,
देवेश[1] को जहाँ पर, अवतार लेना भाया,
वह मातृ-भूमि मेरी, वह पितृ-भूमि मेरी॥
ऊँचा ललाट जिसका, हिमगिरि[2] चमक रहा है,
सुवरन-किरीट जिस पर, आदित्य[3] रख रहा है,
साक्षात् शिव की मूरति, जो सब प्रकार उज्ज्वल,
बहता है जिसके सिर पर, गङ्गा का नीर निरमल,

१—परमात्मा, विष्णु। २—हिमालय। ३—सूर्य।

## ६३—छापाखाना

बालको, तुम जिस पुस्तक को इस समय पढ़ रहे हो, वह हजारों की संख्या में छपी है । ठीक इसी तरह की लिखावट और ठीक इसी तरह के तस्वीरें उन सब पुस्तकों में हैं । तुम्हारे जैसे हजारों बच्चे इसे पढ़ रहे होंगे । जिस आदमी ने इसे लिखा है, अगर वह इन सबको अपने हाथ से लिखने बैठता, तो उसे बहुत अधिक समय लगता । परन्तु उसने तो, वास्तव में, केवल एक किताब लिखी थी, और उसी की सी इतनी अधिक पुस्तकें बहुत थोड़े समय में तैयार कराने की व्यवस्था करके तुम्हारे पास इसे भेजने का प्रबन्ध किया है । अगर वह स्वयं लिख-लिखकर इसे तुम लोगों के पास भेजने लगते तो तुममें से कदाचित् दस-बीस को, अथवा अधिक से अधिक सौ-पचास को भेज पाते । और इसमें जो रङ्ग-बिरङ्गे सुन्दर-सुन्दर, तरह-तरह के चित्र दिये गये हैं, उन सबको तुम सब हर पोथी में बिल्कुल एक से कैसे पाते ? और यदि किसी तरह से यह सब हो भी जाता तो इस पुस्तक का इतना कम दाम थोड़े होता । इस एक

छापे के यंत्र, पुराने और नये
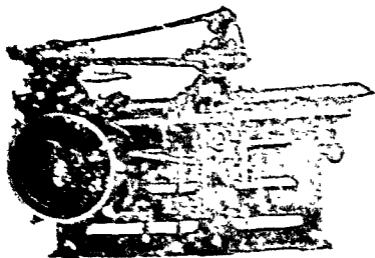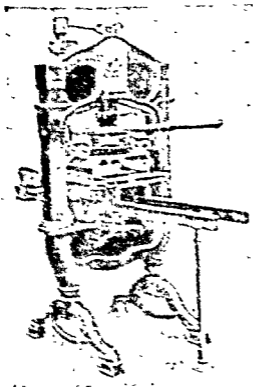
के लिए तुम्हें सैकड़ों रुपये देने पड़ते । ऐसा तुम-में से बहुत कम कर पाते । परन्तु यह सब कुछ जो इतनी सुन्दरता के साथ बहुत थोड़े समय में कम खर्च में हुआ है वह छापाखाना के द्वारा हुआ है । जिस आदमी ने छापने की युक्ति पहले-पहल निकाली थी उसने हम सबका कितना बड़ा उपकार किया है । उसकी बदौलत हम सब कितनी अच्छी-अच्छी पुस्तकें सस्ते मूल्य में पा जाते हैं, और उनसे कितनी अच्छी बातें सीखते हैं ! धन्य है उस महा पुरुष को ।

मगर यह काम किसी एक आदमी का नहीं है । आजकल हम जिस रूप में छापाखाना देखते हैं वह पहले-पहल ऐसा नहीं था । उसमें बराबर उन्नति होती आई और अब भी हो रही है । पहले-पहल, कहते हैं, चीन नाम के देश में काठ के अक्षर बनाये जाते थे । उन पर स्याही लगाकर उनके ऊपर कागज रखकर छापा जाता था । परन्तु इस तरह से छापने में बहुत परिश्रम और समय लगता था ।

आजकल जिस ढङ्ग की छापे की कलों का प्रचार हमारे देश और अन्य देशों में है वे विला-

यत वालों की बनाई हुई है। वहाँ पहले पहल जर्मन देश के एक आदमी ने छापने की कलें बनाई थीं। उसने पहले काठ के अक्षर बनाये। लेकिन वे मजबूत न थे। इससे अधिक समय तक टिकाऊ नहीं रह सकते थे। तब उसके एक साथी ने अक्षरों के साँचे बनाये। उनमें अक्षर ढाले जाने लगे। इस प्रकार आसानी से छपाई आरम्भ हुई।

कुछ समय के पश्चात् इङ्गलैण्ड देश का एक उत्साही नवयुवक जर्मन देश को गया। वहाँ उसने छापने की कला सीखी। अपने देश आकर उसने एक छापाखाना खोला। जब पहले पहल वहाँ छापाखाना खुला तब बहुत दिनों तक उस अद्भुत वस्तु को देखने के लिए हजारों की भीड़ नित्य लगी रहती। उस देश के राजा-रानी तक छापाखाना देखने के लिए गये थे। सब से पहली किताब जो इस छापाखाना में छपी उसका नाम था 'शतरञ्ज का खेल।'

पहले जो कलें छापने के लिए बनी थीं उनके चलाने में बहुत मेहनत लगती थी। धीरे-धीरे उनमें अनेक सुधार हुए। इससे उनसे जल्दी,

२—शिक्षक के अतिरिक्त तुम्हारी समझ में किस-किसकी ऐसी होती है जिसके अनुसार व्यवहार करने से तुम्हारी भलाई ही होगी ?

३—पढ़ने और खेलने के विषय में इस कविता में क्या कहा गया है ? तुम पढ़ना अच्छा समझते हो या खेलना ?

४—पढ़ने के समय खेलने से क्या हानि हो सकती है ?

५—यदि तुम शुद्ध बोलने और लिखने का अभ्यास करोगे तो तुम्हारे सम्बन्धी तुम्हें कैसा विद्यार्थी समझेंगे ?